

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीशिवस्वरोदयः।

महामहोपाध्यायधर्मशास्त्राग्रगण्यश्रीयुत
पं० मिहिरचन्द्रकृत भाषानुवादसमेतः।

जिसमें
राजयोग, हठयोग, प्राणायामादि तत्त्वार्षि-
योंको परमोपयोगी क्रिया वर्णित हैं।

उसीको
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास-
अध्यक्ष 'लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर' छापेखानेमें
पं० शिवदुलारेजी वाजपेयीने मालिकके लिये
छापकर प्रकाशित किया।

संवत् १९७४, शके १८३९.

कल्याण-मुंबई.

सब हक्क यन्त्राधिकारीने अपने आधीन रक्खे हैं।

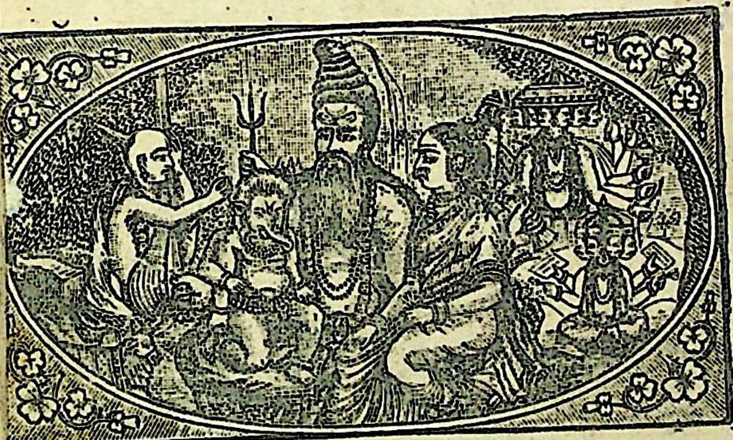
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क
३२७

॥ श्रीशिवाय नमः ॥





पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,

कल्याण-मुंबई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूमिका ।

दोहा ।

अष्ट सिद्धि नव निधि मिलत, मिलत मोक्ष सुखखानि ।
आत्माहून गतिहू मिलत, शिवस्वरोदय जानि ॥

यद्यपि यश, कीर्ति, धन, धाम, मोक्ष मिलनेके अनेक साधन हैं और साधक लोक निज वल, बुद्धि, ज्ञान, ध्यान, धर्म, कर्मद्वारा भवसागर पार होते हैं पर किस गतिको प्राप्त होते हैं यह न देख भविष्यत् वाणी सदा संदेह मेहसी वर्षाती रहती है, जिससे प्रायः समयान्तरमें अनेक धर्म कर्म पंथ चले हैं और नित्य नवीन चले जाते हैं. वास्तवमें सत्य और मानके योग्य वही वस्तु है जिसमें प्रत्यक्ष गुण प्रकट हो अतः यह जो पुस्तक " शिवस्वरोदय " उमामहेश्वरसंवाद है तत्त्वज्ञानकी है. अलवत्तः इसके द्वारा वहुतोंने जीवन सफल किया, तत्त्व, श्वास, नाडी, प्राणायाम कर सिद्ध वने मानो साक्षात् परमेश्वरका उदाहरण कर दिखाया, संस्कृतमेंभी इस अलभ्य पदार्थका मिलना वहुत दुर्लभ था परन्तु हमने वडे परिश्रमसे इस विषयका संस्कृत पुस्तक प्राप्त करके उसको अत्यंत शुद्ध करके सर्वके सुगमार्थ भाषान्तरभी कराया. यद्यपि कायिक, वाचिक, मानसिक तो प्रत्येकके पीछे लगे हैं और लगाना सम्भवभी है परंतु तदपि यह ग्रन्थ केवल कायिकही क्रियासे नरराज किन्तु देवराजतक वना देता है जिनको इस असार संसारमें बेशुमार सुख उठाना हो वह अवश्य इसकी उक्ति गुरुकी भक्तिसे शारीरिक सुरदुर्लभ सुख भोगकर अन्तमें निजेच्छासे आनन्दपूर्वक सुरपुरमें विचरेंगे.

आपका कृपाकांक्षी.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

' लक्ष्मीवेंकटेश्वर ' छापाखाना, कल्याण-मुंबई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः । ९४९ ५/२९

अथ

शिवस्वरोदयविषयानुक्रमणिका ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ शिवस्वरोदयः ।

भाषाटीकासमेतः ।

महेश्वरं नमस्कृत्य शैलजां गणनायकम् ॥
गुरुं च परमात्मानं भजे संसारतारणम् ॥ १ ॥

महादेव, पार्वती, गणेश, गुरु और संसारसे पार करनेवाले परमात्माको भजता हूं अर्थात् प्रणाम आदिसे उनका सेवन करता हूं ॥ १ ॥

देव्युवाच ।

देवदेव महादेव कृपां कृत्वा ममोपरि ॥
सर्वसिद्धिकरं ज्ञानं कथयस्व मम प्रभो ॥ २ ॥

पार्वती कहती है कि, हे देवताओंके देव प्रभो ! मेरे ऊपर कृपा करके संपूर्ण सिद्धियोंके करनेवाले ज्ञानको मेरे लिये कहो ॥ २ ॥

कथं ब्रह्मांडमुत्पन्नं कथं वा परिवर्त्तते ॥
कथं विलीयते देव वद ब्रह्मांडनिर्णयम् ॥ ३ ॥

हे देव ! यह ब्रह्माण्ड कैसे उत्पन्न होता है और किस प्रकार इसका पालन होता है और कैसे इसका प्रलय होता है इस ब्रह्माण्डके निर्णयको मुझे कहो ॥ ३ ॥

ईश्वर उवाच ।

तत्त्वाद्ब्रह्मांडमुत्पन्नं तत्त्वेन परिवर्त्तते ॥
तत्त्वे विलीयते देवि तत्त्वाद्ब्रह्मांडनिर्णयः ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महादेव बोले, ब्रह्माण्ड तत्त्वोंसे उत्पन्न होता है और तत्त्वोंसेही इसकी पालना होती और तत्त्वोंमेंही लीन हो जाता है इससे तत्त्वोंसेही इसका निर्णय समझो ॥ ४ ॥

देव्युवाच ।

तत्त्वमेव परं मूलं निश्चितं तत्त्ववादिभिः ॥
तत्त्वस्वरूपं किं देव तत्त्वमेव प्रकाशय ॥ ५ ॥

पार्वती बोली कि, तत्ववादियोंने ब्रह्माण्डका मूल तत्वकोही निश्चित किया है इससे हे देव! तत्वका स्वरूप क्या है सो मेरे प्रति आपही प्रकट करें ॥ ५ ॥

ईश्वर उवाच ।

निरंजनो निराकार एको देवो महेश्वरः ॥
तस्मादाकाशमुत्पन्नमाकाशाद्वायुसंभवः ॥ ६ ॥

महादेव बोले कि, मायारहित निराकार एक देव परमेश्वर है उससे आकाश पैदा हुआ और आकाशसे वायु उत्पन्न हुई ॥ ६ ॥

वायोस्तेजस्ततश्चापस्ततः पृथ्वीसमुद्भवः ॥
एतानि पंच तत्त्वानि विस्तीर्णानि च पंचधा ॥ ७ ॥

वायुसे तेज और तेजसे जल और जलसे पृथ्वी उत्पन्न हुई ये पांच तत्व एक २ के प्रति पांच प्रकारसे विस्तारको प्राप्त होते हैं अर्थात् पंचीकरण करनेसे पचीस तत्व होते हैं ॥ ७ ॥

तेभ्यो ब्रह्मांडमुत्पन्नं तैरेव परिवर्त्तते ॥
विलीयते च तत्रैव तत्रैव रमते पुनः ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनसे ब्रह्माण्ड उत्पन्न होता है और इन्हींसे ब्रह्माण्डकी पालना होती है और इन्हींमें लीन होकर फिर सूक्ष्म रूपसे बना रहता है ॥ ८ ॥

पंचतत्त्वमये देहे पंच तत्त्वानि सुंदरि ॥
सूक्ष्मरूपेण वर्त्तंते ज्ञायंते तत्त्वयोगिभिः ॥ ९ ॥

हे सुंदरि ! पांच तत्त्वोंसे पैदा हुए देहमें ये पांचों तत्व सूक्ष्म रूपसे वर्तते हैं उनको तत्वोंके ज्ञाता योगी जन जानते हैं ॥९॥

अथ स्वरं प्रवक्ष्यामि शरीरस्थस्वरोदयम् ॥
हंसचारस्वरूपेण भवेज्ज्ञानं त्रिकालजम् ॥ १० ॥

अब शरीरके विषें स्थित स्वरोंकी उत्पत्ति है जिससे ऐसे जो अकार आदि स्वर उनको कहता हूं जिनके ज्ञानसे हंसचाररूपसे भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालोंका ज्ञान होता है ॥ १० ॥

गुह्याद्गुह्यतरं सारमुपकारप्रकाशनम् ॥
इदं स्वरोदयं ज्ञानं ज्ञानानां मस्तके मणिः ॥ ११ ॥

यह स्वरोदय ज्ञान जितनी गोप्य व छिपी वस्तु हैं उनमें गुप्त सार उपकारोंका प्रकाशक और सब ज्ञानोंका शिरोमणि है ॥ ११ ॥

सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं ज्ञानं सुबोधं सत्यप्रत्ययम् ॥
आश्चर्यं नास्तिके लोके आधारं त्वास्तिके जने ॥१२॥

यह स्वरोदय ज्ञान भली प्रकार जानने योग्य और सत्यकी प्रतीतिको करता है जो जन नास्तिक हैं उनको आश्चर्य दिखाता है और जो आस्तिक हैं उनका आधार है ॥ १२ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ शिष्यलक्षणम् ।

शांते शुद्धे सदाचारे गुरुभक्त्यैकमानसे ॥
दृढचित्ते कृतज्ञे च देयं चैव स्वरोदयम् ॥ १३ ॥

शांतस्वभाव शुद्ध उत्तम आचरणशील गुरुकी भक्तिमें जिसका मन और दृढ चित्त किये उपकारोंका ज्ञाता ऐसे शिष्य-कोही स्वरोदय देना ॥ १३ ॥

दुष्टे च दुर्जने क्रुद्धे नास्तिके गुरुतल्पगे ॥
हीनसत्त्वे दुराचारे स्वरज्ञानं न दीयते ॥ १४ ॥

जो दुष्ट दुर्जन क्रोधी नास्तिक गुरुस्त्रीगामी अधीर और दुराचारी हो उसको स्वरका ज्ञान न दे ॥ १४ ॥

शृणु त्वं कथितं देवि देहस्थं ज्ञानमुत्तमम् ॥
येन विज्ञातमात्रेण सर्वज्ञत्वं प्रणीयते ॥ १५ ॥

हे देवि ! तू मेरे कहे हुए देहमें स्थित उत्तम ज्ञानको सुन जिसके ज्ञानमात्रसेही सर्वज्ञ हो जाता है ॥ १५ ॥

स्वरे वेदाश्च शास्त्राणि स्वरे गांधर्वमुत्तमम् ॥
स्वरे च सर्वत्रैलोक्यं स्वरमात्मस्वरूपकम् ॥ १६ ॥

संपूर्ण वेद शास्त्र और उत्तम गांधर्व (गानविद्या) और संपूर्ण त्रिलोकी ये सब स्वरमेंही हैं और स्वरही आत्मस्वरूप है ॥ १६ ॥

स्वरहीनश्च दैवज्ञो नाथहीनं यथा गृहम् ॥
शास्त्रहीनं यथा वक्त्रं शिरोहीनं च यद्वपुः ॥ १७ ॥

स्वरके ज्ञानसे हीन ज्योतिषी और स्वामीसे हीन घर, शास्त्रसे हीन मुख और शिरसे हीन देह शोभित नहीं होते ॥ १७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाडीभेदं तथा प्राणतत्वभेदं तथैव च ॥
सुषुम्नामिश्रभेदं च यो जानाति स मुक्तिगः ॥ १८ ॥

जो मनुष्य नाडी प्राण तत्व और सुषुम्ना आदि मिश्रित तीन नाडियोंके भेदको जानता है वह मुक्तिको प्राप्त होता है ॥ १८॥

साकारे वा निराकारे शुभं वायुबलात्कृते ॥
कथयंति शुभं केचित्स्वरज्ञानं वरानने ॥ १९ ॥

साकार (व्यावहारिक) वा निराकार (पारमार्थिक) में वायु (स्वर) केवल श्रम होता है और हे पार्वति ! कोई यह कहते हैं कि स्वरकेही ज्ञानसे शुभ होता है ॥ १९ ॥

ब्रह्मांडखंडपिंडाद्याः स्वरेणैव हि निर्मिताः ॥
सृष्टिसंहारकर्त्ता च स्वरः साक्षान्महेश्वरः ॥ २० ॥

ब्रह्मांडके खंड और पिंड आदि स्वरकेही रचे हैं और सृष्टि और संहारका कर्ता साक्षात् महेश्वर (शिव) रूप स्वरही है ॥ २० ॥

स्वरज्ञानात्परं गुह्यं स्वरज्ञानात्परं धनम् ॥
स्वरज्ञानात्परं ज्ञानं न वा दृष्टं न वा श्रुतम् ॥ २१ ॥

स्वरके ज्ञानसे परे गुह्य, स्वरके ज्ञानसे परे धन, स्वरके ज्ञानसे परे ज्ञान न देखा है और न सुना है ॥ २१ ॥

शत्रुं हन्यात्स्वरबले तथा मित्रसमागमः ॥
लक्ष्मीप्राप्तिः स्वरबले कीर्तिः स्वरबले सुखम् ॥२२॥

स्वरका बल हो तौ शत्रुको हने और मित्रका समागम और लक्ष्मिकी प्राप्ति, कीर्ति और सुख स्वरकेही बलसे होता है ॥२२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कन्याप्राप्तिः स्वरबले स्वरतो राजदर्शनम् ॥
स्वरेण देवतासिद्धिः स्वरेण क्षितिपो वशः ॥ २३ ॥

कन्याकी प्राप्ति (विवाह) और राजाका दर्शन, देवताकी सिद्धि और राजाका वशमें होना ये स्वरसेही होते हैं ॥ २३ ॥

स्वरेण गम्यते देशो भोज्यं स्वरबले तथा ॥
लघुदीर्घस्वरबले मलं चैव निवारयेत् ॥ २४ ॥

स्वरकेही बलसे देशाटन होता है और स्वरकेही बलसे भोजन और स्वरकेही बलसे लघुशंका और मलका त्याग होता है॥ २४॥

सर्वशास्त्रपुराणादिस्मृतिवेदांगपूर्वकम् ॥
स्वरज्ञानात्परं तत्त्वं नास्ति किंचिद्वरानने ॥ २५ ॥

संपूर्ण शास्त्र और पुराणादि स्मृति और वेदांग आदि ये सब स्वरज्ञानसे परे तत्व नहीं हैं ॥ २५ ॥

नामरूपादिकः सर्वो मिथ्या सर्वेषु विभ्रमः ॥
अज्ञानमोहिता मूढा यावत्तत्त्वं न विद्यते ॥ २६ ॥

जबतक तत्वका ज्ञान नहीं होता तबतक नामरूप आदि भ्रम मिथ्या है और मूढ जनोंको मोहभी तबतकही है ॥ २६ ॥

इदं स्वरोदयं शास्त्रं सर्वशास्त्रोत्तमोत्तमम् ॥
आत्मघटप्रकाशार्थं प्रदीपकलिकोपमम् ॥ २७ ॥

यह स्वरोदय शास्त्र संपूर्ण उत्तम २ शास्त्रोंमें उत्तम है और आत्मरूपी घटके प्रकाशार्थ दीपककी कलिका (कली) के समान है ॥ २७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यस्मै कस्मै परस्मै वा न प्रोक्तं प्रश्नहेतवे ॥
तस्मादेतत्स्वयं ज्ञेयमात्मनो वाऽत्मनाऽऽत्मनि॥२८॥

यह स्वरोदय प्रश्न करनेसे जिस किसको नहीं कहना किंतु अपनेही देहमें अपनी बुद्धिसे स्वयं जानना ॥ २८ ॥

न तिथिर्न च नक्षत्रं न वारो ग्रहदेवताः ॥
न च विष्टिव्यतीपातौ वैधृत्याद्यास्तथैव च ॥ २९ ॥

इस स्वरोदयमें तिथि, नक्षत्र, वार, ग्रह, देवता, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति आदिका दोष नहीं है ॥ २९ ॥

कुयोगो नास्ति को देवि भविता वा कदाचन ॥
प्राप्ते स्वरबले शुद्धे सर्वमेव शुभं फलम् ॥ ३० ॥

हे देवी! इसमें कोई कुयोग नहीं है और न कभी होगा जब स्वरका शुद्ध बल प्राप्त हो तब संपूर्ण फल शुभही होता है॥३०॥

देहमध्ये स्थिता नाड्यो बहुरूपाः सुविस्तराः ॥
ज्ञातव्याश्च बुधैर्नित्यं स्वदेहज्ञानहेतवः ॥ ३१ ॥

देहके मध्यमें अनेकरूप और विस्तारवाली बहुतसी नाडियां स्थित हैं वे सब अपने देहके ज्ञानार्थ विद्वानोंने जानी ॥ ३१ ॥

नाभिस्थानगकंदोर्ध्वमंकुरादेव निर्गताः ॥
द्विसप्ततिसहस्राणि देहमध्ये व्यवस्थिताः ॥ ३२ ॥

नाभिस्थानके कंदसे ऊपर अंकुरके समान निकसी हैं और देहके मध्यमें बहत्तर सहस्र नाडियां स्थित हैं ॥ ३२ ॥

नाडीस्था कुंडली शक्तिर्भुजंगाकारशायिनी ॥
ततो दशोर्ध्वगा नाड्यो दशैवाधः प्रतिष्ठिताः॥३३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाडीमें स्थित और सर्पके समान सोती हुई कुंडली शक्ति है उससे ऊपरको गई हुई दश नाडी हैं और दशही नीचेको गयी हैं ॥ ३३ ॥

द्वे द्वे तिर्यग्गते नाड्यौ चतुर्विंशतिसंख्यया ॥
प्रधाना दश नाड्यस्तु दश वायुप्रवाहकाः ॥ ३४ ॥

दो २ नाडी तिरछी गयी हैं। ये चौबीस नाडी हैं तिनमें दश नाडी प्रधान हैं और दश वायुके प्रवाहको करती हैं॥ ३४ ॥

तिर्यगूर्ध्वास्तथा नाड्यो वायुदेहसमन्विताः ॥
चक्रवत्संस्थिता देहे सर्वाः प्राणसमाश्रिताः ॥ ३५ ॥

तिरछी ऊपर और नीचे स्थित और वायु और देहके आश्रित सब नाडी देहमें चक्रके समान स्थित हैं और सब प्राणके आधीन हैं ॥ ३५ ॥

तासां मध्ये दश श्रेष्ठा दशानां तिस्र उत्तमाः ॥
इडा च पिंगला चैव सुषुम्ना च तृतीयका ॥ ३६ ॥

उन सब नाडियोंमें दश नाडी श्रेष्ठ हैं और उन दशोंमें ये तीन उत्तम हैं कि इडा पिंगला और तीसरी सुषुम्ना॥ ३६ ॥

गांधारी हस्तिजिह्वा च पूषा चैव यशस्विनी ॥
अलंबुषा कुहूश्चैव शंखिनी दशमी तथा ॥ ३७ ॥

गांधारी, हस्तिजिह्वा, पूषा, यशस्विनी, अलंबुषा, कुहू और दशवीं शंखिनी जाननी ॥ ३७ ॥

इडा वामे स्थिता भागे पिंगला दक्षिणे स्मृता ॥
सुषुम्ना मध्यदेशे तु गांधारी वामचक्षुषि ॥ ३८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इडा नाडी वामभागमें, पिंगला दक्षिण भागमें, सुषुम्ना मध्यदशमें और गांधारी वामनेत्रमें जाननी ॥ ३८ ॥

दक्षिणे हस्तिजिह्वा च पूषा कर्णे च दक्षिणे ॥
यशस्विनी वामकर्णे आनने चाप्यलंबुषा ॥ ३९ ॥

दक्षिण नेत्रमें हस्तिजिह्वा और दक्षिण कर्णमें पूषा और वामकर्णमें यशस्विनी और मुखमें अलंबुषा जाननी ॥ ३९ ॥

कुहूश्च लिंगदेशे तु मूलस्थाने तु शंखिनी ॥
एवं द्वारं समाश्रित्य तिष्ठंति दश नाडिकाः ॥ ४० ॥

लिंगदेशमें कुहू और गुदास्थानमें शंखिनी जाननी इस प्रकार शरीरके द्वारोंमें दश नाडी टिकती हैं ॥ ४० ॥

इडा पिंगला सुषुम्ना च प्राणमार्गे समाश्रिताः ॥
एता हि दश नाड्यस्तु देहमध्ये व्यवस्थिताः ॥ ४१ ॥

इडा, पिंगला, सुषुम्ना ये तीनों प्राणमार्गमें आश्रित हैं ये दश नाडी देहके मध्यमें स्थित हैं ॥ ४१ ॥

नामानि नाडिकानां तु वातानां तु वदाम्यहम् ॥
प्राणोऽपानः समानश्च उदानो व्यान एव च ॥ ४२ ॥

नाडियोंके आश्रय जो वायु हैं उनके नाम मैं कहता हूं कि, प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान ॥ ४२ ॥

नागः कूर्मोऽथ कृकलो देवदत्तो धनंजयः ॥
हृदि प्राणो वसेन्नित्यमपानो गुदमंडले ॥ ४३ ॥

नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय और प्राण वायु हृदयमें और अपान गुदामंडलमें सदैव वसता है ॥ ४३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समानो नाभिदेशे तु उदानः कंठमध्यगः ॥
व्यानो व्यापी शरीरेषु प्रधाना दश वायवः ॥ ४४ ॥

समान नाभिदेशमें, कंठके मध्यमें उदान और सब शरीरमें व्यापी व्यान वायु होता है। ये दश वायु प्रधान हैं ॥ ४४ ॥

प्राणाद्याः पंच विख्याता नागाद्याः पंच वायवः ॥
तेषामपि च पंचानां स्थानानि च वदाम्यहम् ॥ ४५ ॥

पांच प्राण आदि और पांच नाग आदि हैं उन नाग आदि पांचोंकेभी मैं स्थान कहता हूं ॥ ४५ ॥

उद्गारे नाग आख्यातः कूर्म उन्मीलने स्मृतः ॥
कृकलः क्षुतकृज्ज्ञेयो देवदत्तो विजृंभणे ॥ ४६ ॥

उद्गार (उगलने) में नाग वायु और नेत्रोंके उन्मीलनमें कूर्म और छींकनेमें कृकल और विजृंभण (जंभाई) में देवदत्त वायु जानना ॥ ४६ ॥

न जहाति मृतं वापि सर्वव्यापी धनंजयः ॥
एते नाडीषु सर्वासु भ्रमंते जीवरूपिणः ॥ ४७ ॥

और सर्व शरीरमें व्यापी धनंजय वायु मृत शरीरकोभी नहीं त्यागता। जीवरूपी ये दश वायु सब नाडियोंमें भ्रमते हैं ॥ ४७ ॥

प्रकटं प्राणसंचारं लक्षयेद्देहमध्यतः ॥
इडापिंगलासुषुम्नाभिर्नाडीभिस्तिसृभिर्बुधः ॥ ४८ ॥

देहके मध्यमें जो प्रकट प्राणका संचार है उसको इडा, पिंगला, सुषुम्ना इन तीन नाडियोंसेही बुद्धिमान् मनुष्य जाने ॥ ४८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इडा वामे च विज्ञेया पिंगला दक्षिणे स्मृता ॥
इडानाडी स्थिता वामा ततो व्यस्ता च पिंगला॥४९॥

वामभागमें इडा और दक्षिण भागमें पिंगला कहीहै। इडानाडी वामरूपसे स्थित है और व्यस्त उलटी पिंगला स्थित है॥ ४९॥

इडायां तु स्थितश्चंद्रः पिंगलायां च भास्करः ॥
सुषुम्ना शंभुरूपेण शंभुर्हंसस्वरूपतः ॥ ५० ॥

इडामें चन्द्रमा स्थित है और पिंगलामें सूर्य और सुषुम्नामें हंसरूपसे स्थित है और हंस शंभुरूपसे स्थित है॥ ५० ॥

हकारो निर्गमे प्रोक्तः सकारेण प्रवेशनम् ॥
हकारः शिवरूपेण सकारः शक्तिरुच्यते ॥ ५१ ॥

स्वरके निकसनेमें हकार कहा है और प्रवेशमें सकार। हकार शिवरूप कहा है और सकार शक्तिरूप कहा है ॥ ५१ ॥

शक्तिरूपः स्थितश्चंद्रो वामनाडीप्रवाहकः ॥
दक्षनाडीप्रवाहश्च शंभुरूपो दिवाकरः ॥ ५२ ॥

वाम नाडीका प्रवाहक चंद्रमा शक्तिरूपसे स्थित है और दक्षिण नाडीका प्रवाहक (चलानेवाला) शंभुरूप सूर्य स्थित है ॥५२॥

श्वासे सकारसंस्थे तु यद्दानं दीयते बुधैः ॥
तद्दानं जीवलोकेऽस्मिन् कोटिकोटिगुणं भवेत् ॥५३॥

जब श्वास सकारमें स्थित हो उस समय जो दान बुद्धिमान् मनुष्य दे वह दान इस जीवलोकमें कोटिगुना फल देता है॥५३॥

अनेन लक्षयेद्योगी चैकचित्तः समाहितः ॥
सर्वमेष विजानीयान्मार्गे वै चंद्रसूर्ययोः ॥ ५४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकाग्र चित्त और समाहित (सावधान) योगी इसी मार्गसे देखे और चंद्रमा और सूर्यके मार्गमेंही सबको जान ले ॥५४॥

ध्यायेत्तत्त्वं स्थिरे जीवे अस्थिरे न कदाचन ॥
इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य महालाभो जयस्तथा ॥ ५५ ॥

जो मनुष्य जिस समय जीव स्थिर हो उसी समय तत्त्वका ध्यान करे अस्थिर (चंचल) में कदाचित् न करे उसके इष्टकी सिद्धि होती है और महान् लाभ और जय होता है ॥ ५५ ॥

चंद्रसूर्यसमभ्यासं ये कुर्वंति सदा नराः ॥
अतीतानागतज्ञानं तेषां हस्तगतं भवेत् ॥ ५६ ॥

जो मनुष्य सदैव चंद्र सूर्य स्वरोंका भली प्रकार अभ्यास करते हैं उनको भूत और भविष्यका ज्ञान हस्तगत (प्रत्यक्ष) होता है ॥ ५६ ॥

वामे चामृतरूपा स्याज्जगदाप्यायनं परम् ॥
दक्षिणे चरभागेन जगदुत्पादयेत्सदा ॥ ५७ ॥

वाम भागकी नाडी इडा अमृतरूप और सब जगत्की पोषक होती है और दक्षिणके चर भागकी पिंगला नाडी सदैव जगत्को पैदा करती है ॥ ५७ ॥

मध्यमा भवति क्रूरा दुष्टा सर्वत्र कर्मसु ॥
सर्वत्र शुभकार्येषु वामा भवति सिद्धिदा ॥ ५८ ॥

मध्यमा (सुषुम्ना) नाडी क्रूरा और संपूर्ण कार्योंमें दुष्ट होती है और वामा नाडी संपूर्ण शुभ कार्योंमें सिद्धिकी दाता होती है ॥ ५८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फ
३२७

निर्गमे तु शुभा वामा प्रवेशे दक्षिणा शुभा ॥
चंद्रः समः सुविज्ञेयो रविस्तु विषमः सदा ॥ ५९ ॥

गमनके समयमें वामा नाडी और प्रवेशके समयमें दक्षिण नाडी शुभ होती है और चंद्रमाको सम और सूर्यको विषम सदैव जानना ॥ ५९ ॥

चंद्रः स्त्री पुरुषः सूर्यश्चंद्रो गौरोऽसितो रविः ॥
चंद्रनाडीप्रवाहेण सौम्यकार्याणि कारयेत् ॥ ६० ॥

चन्द्रमा स्त्री और सूर्य पुरुष और चन्द्रमा गौरवर्ण और सूर्य कृष्ण वर्ण जानना और जब चंद्रमाकी नाडीका प्रवाह हो उस समय सौम्य कार्योंको करे ॥ ६० ॥

सूर्यनाडीप्रवाहेण रौद्रकर्माणि कारयेत् ॥
सुषुम्नायाः प्रवाहेण भुक्तिमुक्तिफलानि च ॥ ६१ ॥

सूर्यनाडीके प्रवाहमें रौद्र (क्रूर) कर्मोंको करे और सुषुम्नाके प्रवाहमें भोग और मुक्तिफलके देनेवाले कार्योंको करे ॥ ६१ ॥

आदौ चंद्रः सिते पक्षे भास्करो हि सितेतरे ॥
प्रतिपत्तो दिनान्याहुस्त्रीणि त्रीणि कृतोदयौ ॥ ६२ ॥

शुक्लपक्षमें प्रथम चंद्रमाका स्वर और कृष्णपक्षमें प्रथम सूर्यका स्वर चलता है और प्रतिपदासे लेकर तीन २ दिन चंद्रमा और सूर्यका स्वर बलवान् होता है ॥ ६२ ॥

सार्धद्विघटिके ज्ञेयः शुक्ले कृष्णे शशी रविः ॥
वहत्येकदिनेनैव यथा षष्टिघटीः क्रमात् ॥ ६३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढाई ढाई घटी शुक्लपक्षमें चंद्रमा ढाई ढाई घटी कृष्णपक्षमें सूर्य एक दिनमें साठ घटी पर्यंत बहते हैं अर्थात् दोनों स्वरोंकी क्रमसे चौबीस २ आवृत्ति होती हैं ॥ ६३ ॥

वहेयुस्तद्घटीमध्ये पंच तत्त्वानि निर्दिशेत् ॥
प्रतिपत्तो दिनान्याहुर्विपरीते विवर्जयेत् ॥ ६४ ॥

उन प्रत्येक ढाई घटियोंमें पांचों तत्व बहते हैं और प्रतिपदासे लेकर जो चंद्रमा और सूर्यके दिन कहे हैं उनसे विपरीत होय अर्थात् चंद्रमाके स्वरमें सूर्यका और सूर्यके समयमें चंद्रमाका स्वर चले तो उसको वर्ज दे क्योंकि वह अशुभ है ॥ ६४ ॥

शुक्लपक्षे भवेद्वामा कृष्णपक्षे च दक्षिणा ॥
जानीयात्प्रतिपत्पूर्वयोगी तद्यतमानसः ॥ ६५ ॥

शुक्लपक्षमें प्रतिपदासे लेकर प्रथम वामा और कृष्णपक्षमें प्रथम दक्षिणा नाडीको योगी एकाग्र अन्तःकरणसे जाने ॥ ६५ ॥

शशांकं वारयेद्रात्रौ दिवा वारय भास्करम् ॥
इत्यभ्यासरतो नित्यं स योगी नात्र संशयः ॥ ६६ ॥

रात्रीके समय चंद्रस्वरको और दिनके समय सूर्यस्वरको निवारण करे इस प्रकार अभ्यासमें जो तत्पर है वही योगी है इसमें संशय नहीं ॥ ६६ ॥

सूर्येण बध्यते सूर्यश्चंद्रश्चंद्रेण बध्यते ॥
यो जानाति क्रियामेतां त्रैलोक्यं वशगं क्षणात् ६७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूर्यके स्वरसे सूर्य और चंद्रमाके स्वरसे चंद्रमा बंद होता है और जो मनुष्य इस क्रियाको जानता है उसके वशमें त्रिलोक क्षणमात्रमें होते हैं ॥ ६७ ॥

उदयं चंद्रमार्गेण सूर्येणास्तमनं यदि ॥
तदा ते गुणसंघाता विपरीतं विवर्जयेत् ॥ ६८ ॥

यदि चंद्रमाके स्वरमें सूर्यका उदय हो और सूर्यके स्वरमें अस्त हो तो उस समय अनेक गुणोंके समूह पैदा होते हैं और इससे विपरीत (उलटा) हो तो उसको वर्ज दे ॥ ६८ ॥

गुरुशुक्रबुधेंदूनां वासरे वामनाडिका ॥
सिद्धिदा सर्वकार्येषु शुक्लपक्षे विशेषतः ॥ ६९ ॥

बृहस्पति, शुक्र, बुध और सोम इन वारोंमें वाम नाडी सब कार्योंमें सिद्धिकी दाता होती है और शुक्लपक्षमें यह होय तो औरभी विशेष फल होता है ॥ ६९ ॥

अर्कांगारकसौरीणां वासरे दक्षनाडिका ॥
स्मर्त्तव्या चरकार्येषु कृष्णपक्षे विशेषतः ॥ ७० ॥

आदित्य, मङ्गल, शनैश्चर इन वारोंमें दक्षिणनाडीका स्मरण चरकार्योंमें करना और इसका फल कृष्णपक्षमें विशेष कर होता है ॥ ७० ॥

प्रथमं वहते वायुर्द्वितीयं च तथानलः ॥
तृतीयं वहते भूमिश्चतुर्थं वारुणी वहेत् ॥ ७१ ॥

प्रथम वायुतत्व वहता है, द्वितीय वार अग्नितत्त्व, तृतीय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार भूमितत्त्व, चतुर्थ वार वरुणतत्व और पांचवीं वार आकाशतत्व वहता है ॥ ७१ ॥

सार्धद्विघटिके पंच क्रमेणैवोपयांति च ॥
क्रमादेकैनाड्यां च तत्वानां पृथगुद्भवः ॥ ७२ ॥

ढाई घटीके मध्यमें ये पूर्वोक्त पांचों तत्व क्रमसे उदय होते हैं और एक २ नाडीमेंभी क्रमसे पृथक् पांचों तत्व उदय होते हैं ७२

अहोरात्रस्य मध्ये तु ज्ञेया द्वादश संक्रमाः ॥
वृषकर्कटकन्यालिमृगमीना निशाकरे ॥ ७३ ॥

रात्रि और दिनके मध्यमें चंद्र और सूर्यकी बारह संक्रांति जाननी तिनमें वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन संक्रांति चंद्रमाकी होती हैं ॥ ७३ ॥

मेषसिंहौ च कुंभश्च तुला च मिथुनं धनम् ॥
उदये दक्षिणे ज्ञेयः शुभाशुभविनिर्णयः ॥ ७४ ॥

मेष, सिंह, कुंभ, तुला, मिथुन, धन ये संक्रांति सूर्यकी जाननी । इस प्रकार उदय और दक्षिणके शुभ अशुभका निर्णय जानना ॥ ७४ ॥

तिष्ठेत्पूर्वोत्तरे चंद्रो भानुः पश्चिमदक्षिणे ॥
दक्षनाड्याः प्रसारे तु न गच्छेद्याम्यपश्चिमे ॥ ७५ ॥

पूर्व और उत्तरमें चंद्रमा टिकता है और पश्चिम और दक्षिणमें सूर्य । दक्षिण नाडीके प्रवाह (स्वर) में दक्षिण और पश्चिममें न जाय ॥ ७५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वामाचारप्रवाहे तु न गच्छेत्पूर्व उत्तरे ॥
परिपंथिभयं तस्य गतोऽसौ न निवर्त्तते ॥ ७६ ॥

वामनाडीके प्रचारमें पूर्व और उत्तरमें न जाय, जाय तौ उसको शत्रुका भय होता है और गया वह फिर नहीं लौटता ॥ ७६ ॥

तत्र तस्मान्न गंतव्यं बुधैः सर्वहितैषिभिः ॥
तदा तत्र तु संयाते मृत्युरेव न संशयः ॥ ७७ ॥

तिससे सबके हितैषी उस समय न जाय, यदि उस समयमें जाय तो मृत्यु होनेमें संदेह नहीं होता ॥ ७७ ॥

शुक्लपक्षे द्वितीयायामर्के वहति चंद्रमाः ॥
दृश्यते लाभदः पुंसां सौम्ये सौख्यं प्रजायते ॥७८॥

यदि शुक्लपक्षकी द्वितीयाके दिन सूर्यके प्रवाहमें चंद्रमा वहे तो पुरुषोंको लाभदायक होता है और उस समय सौम्य कार्य किया जाय तो सुख होता है ॥ ७८ ॥

सूर्योदये यदा सूर्यश्चंद्रश्चंद्रोदये भवेत् ॥
सिद्ध्यंति सर्वकार्याणि दिवारात्रिगतान्यपि ॥ ७९ ॥

जिस समय सूर्यके उदयमें सूर्य और चंद्रमाके उदयमें चंद्रमाकाही स्वर हो उस समय दिन वा रात्रिमें किये हुए सब काम सिद्ध होते हैं ॥ ७९ ॥

चंद्रकाले यदा सूर्यः सूर्यश्चंद्रोदये भवेत् ॥
उद्वेगः कलहो हानिः शुभं सर्वं निवारयेत् ॥ ८० ॥

जिस समय चंद्रमाके समयमें सूर्य और सूर्यके समयमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चंद्रमा होय तब उद्वेग, कलह और हानि होती है और संपूर्ण शुभकी निवृत्ति होती है ॥ ८० ॥

सूर्यस्य वाहे प्रवदंति विज्ञा ज्ञानं ह्यगम्यस्य तु निश्चयेन ॥ श्वासेन युक्तस्य तु शीतरश्मेः प्रवाहकाले फलमन्यथा स्यात् ॥ ८१ ॥

बुद्धिमान् मनुष्य सूर्यके प्रवाहमें अगम्य (जो न देखी न सुनी) वस्तुका ज्ञान निश्चयसे कहते हैं और चंद्रमाके श्वासका प्रवाह हो तो अन्यथा फल होता है अर्थात् अगम्य वस्तुका ज्ञान नहीं होता ॥ ८१ ॥

अथ विपरीतलक्षणम् ।

यदा प्रत्यूषकालेन विपरीतादयो भवेत् ॥
चंद्रस्थाने वहत्यर्को रविस्थाने च चंद्रमाः ॥ ८२ ॥

जिस दिन प्रातःकालसे लेकर विपरीत स्वरोंका उदय हो अर्थात् चंद्रमाके स्थानमें सूर्य और सूर्यके स्थानमें चंद्रमा वहे उस समय यह फल जानना कि ॥ ८२ ॥

प्रथमे मनउद्वेगं धनहानिर्द्वितीयके ॥
तृतीये गमनं प्रोक्तमिष्टनाशं चतुर्थके ॥ ८३ ॥

प्रथममें मनका उद्वेग, दूसरेमें धनकी हानि, तीसरेमें गमन और चौथेमें इष्टका नाश होता है ॥ ८३ ॥

पंचमे राजविध्वंसं षष्ठे सर्वार्थनाशनम् ॥
सप्तमे व्याधिदुःखानि अष्टमे मृत्युमादिशेत् ॥ ८४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पांचवेंमें राज्यका विध्वंस, छठेमें संपूर्ण अर्थोंका नाश, सातवेंमें व्याधि और दुःख और आठवेंमें मृत्युका होना कहा है ॥ ८४ ॥

कालत्रये दिनान्यष्ट विपरीतं यदा वहेत् ॥
तदा दुष्टफलं प्रोक्तं किंचिन्न्यूनं तु शोभनम् ॥ ८५ ॥

प्रातःकाल, मध्याह्न और सायंकाल इन तीनों कालोंमें यदि पूर्वोक्त विपरीत स्वरोंका उदय यदि आठ दिनतक बराबर चले तो उस समय दुष्ट फल कहा है, यदि कुछ कम विपरीत चले तो शुभ फल जानना ॥ ८५ ॥

प्रातर्मध्याह्नयोश्चंद्रः सायंकाले दिवाकरः ॥
तदा नित्यं जयो लाभो विपरीतं विवर्जयेत् ॥ ८६ ॥

जिस दिन प्रातःकाल और मध्याह्नको चंद्रमाका स्वर और सायंकालको सूर्यका स्वर चले तो उस दिन जय और लाभ कहा है और विपरीत चले तो वर्ज दे अर्थात् अनिष्ट फल होता है ॥ ८६ ॥

वामे वा दक्षिणे वापि यत्र संक्रमते शिवः ॥
कृत्वा तत्पादमादौ च यात्रा भवति सिद्धिदा ॥ ८७ ॥

यात्राके समय वाम वा दक्षिण जो स्वर चलता हो उसी चरणको प्रथम आगे रखकर यात्रा करे तो वह यात्रा सिद्धिकी दाता होती है ॥ ८७ ॥

चंद्रः समपदः कार्यो रविस्तु विषमः सदा ॥
पूर्णपादं पुरस्कृत्य यात्रा भवति सिद्धिदा ॥ ८८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चंद्रमाका स्वर चलता हो तो सम पद । २ । ४ । ६ आदि आगे रखने और सूर्यका स्वर चलता हो तो विषम पद १ । ३ । ५ आदि आगे रखने इस प्रकार पूर्ण पाद आगे रखनेसे यात्रा सिद्धिकी दाता होती है ॥ ८८ ॥

यत्रांगे वहते वायुस्तदंगकरसत्तलात् ॥
सुप्तोत्थितो मुखं स्पृष्ट्वा लभते वांछितं फलम् ॥८९॥

जिस अंगका स्वर चलता हो उसी अंगके हाथके तलसे शयनसे उठकर मनुष्य मुखका स्पर्श करे तो वांछित फलको प्राप्त होता है ॥ ८९ ॥

परदत्ते तथा ग्राह्ये गृहान्निर्गमनेऽपि च ॥
यदंगे वहते नाडी ग्राह्यं तेन करांघ्रिणा ॥ ९० ॥

दूसरेको दान देने व ग्रहण करनेमें वा घरसे बाहर जानेमें जिस अंगकी नाडी चलती हो उसी हाथ वा पैरको आगे करके वस्तुको ग्रहण करे तो ॥ ९० ॥

न हानिः कलहो नैव कंटकैर्नापि भिद्यते ॥
निवर्त्तते सुखी चैव सर्वोपद्रववर्जितः ॥ ९१ ॥

न हानि हो, न कलह हो और न कंटक (शत्रु) से विंधे और वह सर्वदा सुखी रहे और सब उपद्रवोंसे वर्जित रहेगा ॥ ९१ ॥

गुरुबंधुनृपामात्येष्वन्येषु शुभदायिनी ॥
पूर्णांगे खलु कर्त्तव्या कार्यसिद्धिर्मनःस्थिता ॥ ९२ ॥

गुरु, बंधु, राजा, मंत्री आदिसे शुभ देनेवाली कार्यकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिद्धि करनी हो तो पूर्ण हाथसे अर्थात् हाथमें कोई फल आदि लेकर करनी वह सिद्धि मनोवांछित फलको देती है ॥ ९२ ॥

अग्निचोराधर्मधर्मा अन्येषां वादिनिग्रहः ॥
कर्त्तव्याः खलु रिक्तायां जयलाभसुखार्थिभिः ॥ ९३ ॥

अग्निका दाह, चोर, अधर्म कार्य और वादीका निग्रह (दंड) करना होय तो रिक्त (खाली) हाथसेही जय लाभ सुखके अभिलाषी मनुष्य कार्यसिद्धिको करे ॥ ९३ ॥

दूरदेशे विधातव्यं गमनं तु हिमद्युतौ ॥
अभ्यर्णदेशे दीप्ते तु तरणाविति केचन ॥ ९४ ॥

कोई ऐसे कहते हैं कि दूर देशमें जाना हो तो चंद्रमाके स्वरमें और समीपके देशमें जाय तो सूर्यके स्वरमें गमन करे ॥ ९४ ॥

यत्किंचित्पूर्वमुद्दिष्टं लाभादिसमरागमः ॥
तत्सर्वं पूर्णनाडीषु जायते निर्विकल्पकम् ॥ ९५ ॥

जो कुछ लाभ आदि प्रथम कहा है वह सब युद्धके समय तभी निःसंदेह होता है जब नाडी पूरे २ स्वरसे चलती हो ॥ ९५ ॥

शून्यनाड्या विपर्यस्तं यत्पूर्वं प्रतिपादितम् ॥
जायते नान्यथा चैव यथा सर्वज्ञभाषितम् ॥ ९६ ॥

शून्य नाडी चलती हो तो वह पूर्वोक्त फल शिवजीके कथनानुसार अन्यथा (उलटा) होता है ॥ ९६ ॥

व्यवहारे खलोच्चाटे द्वेषि विद्यादिवंचके ॥
कुपितस्वामिचोराद्ये पूर्णस्थाः स्युर्भयंकराः ॥ ९७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यवहार, दुष्टमनुष्यका उच्चाटन, वैरी, विद्या आदि ठगनासे स्वामीका कोप और चौर आदि क्रूर कामोंमें पूर्ण स्वर भयके कर्ता होते हैं अर्थात् अच्छे नहीं ॥ ९७ ॥

दूराध्वनि शुभश्चंद्रो निर्विघ्नोऽभीष्टसिद्धिदः ॥
प्रवेशकार्यहेतौ च सूर्यनाडी प्रशस्यते ॥ ९८ ॥

जो मनुष्य दूर मार्गमें जाया चाहे उसको चंद्रमाका स्वर शुभ है और निर्विघ्न वांछितकी सिद्धिकर्ता और प्रवेशके कार्यमें सूर्यकी नाडी श्रेष्ठ होती है ॥ ९८ ॥

अयोग्ये योग्यता नाड्या योग्यस्थानेऽप्ययोग्यता ॥
कार्यानुबंधनो जीवो यथा रुद्रस्तथाचरेत् ॥ ९९ ॥

अयोग्य कार्यमें नाडीकी योग्यता और योग्य कार्यमें अयोग्यताको कार्यका अनुबंधी जीव प्राप्त होता है इससे जैसा स्वर हो तैसाही आचरण मनुष्य करे ॥ ९९ ॥

चंद्रचारे विषहते सूर्यो बलिवशं नयेत् ॥
सुषुम्नायां भवेन्मोक्ष एको देवस्त्रिधा स्थितः ॥ १०० ॥

चंद्रमाका स्वर चले तो किसीके किये अपराधकोभी मनुष्य सह लेता है और सूर्यका स्वर चले तो बलवान्भी वशमें हो सकता है और सुषुम्ना नाडीका स्वर हो तो मोक्ष होता है इस प्रकार एक देव (स्वर) तीन प्रकारसे स्थित है ॥ १०० ॥

शुभान्यशुभकार्याणि क्रियतेऽहर्निशं यदा ॥
तदकार्यानुरोधेन कार्यं नाडीप्रचालनम् ॥ १०१ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस समय रात दिन शुभ और अशुभ कार्य किये जांय तब कार्यके अनुसार नाडीको चलावे ॥ १०१ ॥

अथ इडा।

स्थिरकर्मण्यलंकारे दूराध्वगमने तथा ॥
आश्रमे धर्मप्रासादे वस्तूनां संग्रहेऽपि च ॥ १०२ ॥

स्थिर कार्य, भूषण, दूर मार्गमें गमन, आश्रम, धर्मप्रासाद (मंदिर) और घरकी वस्तुओंका संग्रह (संचय) करनेमें ॥ १०२ ॥

वापीकूपतडागानां प्रतिष्ठास्तंभदेवयोः ॥
यात्रादाने विवाहे च वस्त्रालंकारभूषणे ॥ १०३ ॥

बावडी, कूप, तालाव, देव स्तंभ इनकी प्रतिष्ठा और यात्रा, दान, विवाह, वस्त्र, अलंकार भूषण इनमें ॥ १०३ ॥

शांतके पौष्टिके चैव दिव्यौषधिरसायने ॥
स्वस्वामिदर्शने मित्रे वाणिज्ये कणसंग्रहे ॥ १०४ ॥

शांति और पुष्टिके कर्म, दिव्य औषधि, रसायन, अपने स्वामिके दर्शन, मित्र और व्यापार और कण (अन्न) के संग्रहमें ॥ १०४ ॥

गृहप्रवेशे सेवायां कृषौ च बीजवापने ॥
शुभकर्माणि संधौ च निर्गमे च शुभः शशी ॥१०५॥

गृहप्रवेश, सेवा, खेती, बीजोंका बोना, शुभकर्म, संधि (मेल) और गमन इनमें चंद्रमाका स्वर (इडा) शुभ होता है ॥ १०५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्यारंभादिकार्येषु बांधवानां च दर्शने ॥
जन्ममोक्षे च धर्मे च दीक्षायां मंत्रसाधने ॥ १०६ ॥

विद्यारंभ आदि कार्योंमें, बांधवोंके दर्शनमें, जन्म और मोक्षमें धर्ममें, यज्ञ आदिकी दीक्षामें, मंत्रकी सिद्धिमें ॥ १०६ ॥

कालविज्ञानसूत्रे तु चतुष्पादगृहागमे ॥
कालव्याधिचिकित्सायां स्वामिसंबोधने तथा १०७॥

कालके ज्ञान व सूत्र, चतुष्पादों (पशु) के घरमें आगमनमें, कालकी व्याधिकी चिकित्सामें, स्वामीके संबोधन (बुलाने) में ॥ १०७ ॥

गजाश्वारोहणे धन्विगजाश्वानां च बंधने ॥
परोपकरणे चैव निधीनां स्थापने तथा ॥ १०८ ॥

हाथी व घोडेकी सवारी, धनुष्यका धारण, हाथी व घोडेका बांधना, परका उपकार करना, निधि (खजाने) का स्थापन करना ॥ १०८ ॥

गीतवाद्यादिनृत्यादौ नृत्यशास्त्रविचारणे ॥
पुरग्रामनिवेशे च तिलकक्षेत्रधारणे ॥ १०९ ॥

गीत, वादित्र (बाजा), नृत्य और नृत्यशास्त्रका विचार, पुर और ग्रामका प्रवेश, तिलक और खेतका धारण इनमेंभी चंद्रनाडी (इडा) शुभ होती है ॥ १०९ ॥

आर्तिशोकविषादे च ज्वरिते मूर्छितेऽपि वा ॥
स्वजनस्वामिसंबंधे अन्नादेर्दारुसंग्रहे ॥ ११० ॥

रोग, शोक, विषाद (उदासी), ज्वर, पीडा, मूर्छा, अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन और स्वामीके संबंधमें अन्न और काठके संग्रहमेंभी चंद्रनाडी श्रेष्ठ है ॥ ११० ॥

स्त्रीणां दंतादिभूषायां वृष्टेरागमने तथा ॥
गुरुपूजाविषादीनां चालने च वरानने ॥ १११ ॥

स्त्रियोंका दंत आदिका भूषण, वृष्टिका आगमन, गुरुकी पूजा, विष आदिका चालन (बाहिर निकासने) में हे पार्वती! चंद्रनाडी श्रेष्ठ है ॥ १११ ॥

इडायां सिद्धिदं प्रोक्तं योगाभ्यासादि कर्म च ॥
तत्रापि वर्जयेद्वायुं तेज आकाशमेव च ॥ ११२ ॥

इडा नाडीमें योगाभ्यास आदि कर्म सिद्धिका कहा है तथापि इडा नाडीमें जब वायु और आकाशतत्व वहते हों तब इडाकोभी वर्ज दे ॥ ११२ ॥

सर्वकार्याणि सिद्धचंति दिवारात्रिगतान्यपि ॥
सर्वेषु शुभकार्येषु चंद्राचारः प्रशस्यते ॥ ११३ ॥

दिन और रात्रिके सब काम इडानाडीमें सिद्ध होते हैं और संपूर्ण शुभ कार्योंमें चंद्रमाका चार (इडा) उत्तम होता है ॥ ११३ ॥

अथ पिंगला।

कठिनक्रूरविद्यानां पठने पाठने तथा ॥
स्त्रीसंगवेश्यागमने महानौकाधिरोहणे ॥ ११४ ॥

कठिन और क्रूर (मरण आदि) विद्याओंके पढने व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पढनेमें, स्त्रीका संग और वेश्याके गमनमें, महानौका (जहाज) के चढनेमें ॥ ११४ ॥

भ्रष्टकार्ये सुरापाने वीरमंत्राद्युपासने ॥
विह्वलोध्वंसदेशादौ विषदाने च वैरिणाम् ॥ ११५ ॥

भ्रष्टकार्य, मदिराका पान, वीरमंत्र आदिकी उपासना, विह्वल होना, देशका विध्वंस, वैरियोंको विष देना ॥ ११५ ॥

शास्त्राभ्यासे च गमने मृगयापशुविक्रये ॥
इष्टिकाकाष्ठपाषाणरत्नघर्षणदारुणे ॥ ११६ ॥

शास्त्रका अभ्यास, गमन, मृगया, पशुओंका बेचना, ईंट काठ पत्थर रत्न इनका घिसना और तोडना इनमें सूर्यनाडी (पिंगला) श्रेष्ठ है ॥ ११६ ॥

गत्यभ्यासे यंत्रतंत्रे दुर्गपर्वतरोहणे ॥
द्यूते चौर्ये गजाश्वादिरथसाधनवाहने ॥ ११७ ॥

गमनका अभ्यास, यत्र, तंत्र, किला और पर्वतपर चढना, द्यूत (जुवा), चोरी करना, हाथी घोडा रथ इनको साधना व चलाना ॥ ११७ ॥

व्यायामे मारणोच्चाटे षट्कर्मादिकसाधने ॥
यक्षिणीयक्षवेतालविषभूतादिनिग्रहे ॥ ११८ ॥

व्यायाम (कसरत), मारण, उच्चाटन, षट्कर्मोंकी सिद्धि करना यक्षिणी यक्ष वेताल विष भूत आदिका निग्रह (रोकना)॥ ११८॥

खरोष्ट्रमहिषादीनां गजाश्वारोहणे तथा ॥
नदीजलौघतरणे भेषजे लिपिलेखने ॥ ११९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गधा ऊंट भैंसा हाथी घोडा इनपर चढना, नदीके जल वेगसे पार उतरना, औषध करना, लीपना व लिखना ॥ ११९ ॥

मारणे मोहने स्तंभे विद्वेषोच्चाटने वशे ॥
प्रेरणे कर्षणे क्षोभे दाने च क्रयविक्रये ॥ १२० ॥

मारना, मोहना, स्तंभ (रोक) करना, विद्वेष (वैर) करना उच्चाटन, वशमें करना, प्रेरण, खेती करना, क्षोभ, दान, लेनदेनमें ॥ १२० ॥

प्रेताकर्षणविद्वेषशत्रुनिग्रहणेऽपि च ॥
खड्गहस्ते वैरियुद्धे भोगे वा राजदर्शने ॥
भोज्ये स्नाने व्यवहारे दीप्तकार्ये रविः शुभः ॥१२१ ॥

प्रेतका आकर्षण (बुलाना), शत्रुका निग्रह, दंड, खड्ग (तलवार) को हाथमें लेना, वैरीके संग युद्ध, भोग, राजाके दर्शनमें, भोजन, स्नान, व्यवहार, दीप्त (प्रकाशित) कार्य इनमें सूर्यनाडी (पिंगला) शुभ कही है ॥ १२१ ॥

भुक्तमार्गेण मंदाग्नौ स्त्रीणां वश्यादिकर्माणि ॥
शयनं सूर्यवाहेन कर्तव्यं सर्वदा बुधैः ॥ १२२ ॥

भोजनके द्वारा मंदाग्नि करना, स्त्रियोंको वशमें करना, सोना ये सब काम पंडितजन सूर्य स्वरके चलते समयमें करे ॥ १२२॥

क्रूराणि सर्वकर्माणि चराणि विविधानि च ॥
तानि सिद्ध्यंति सूर्येण नात्र कार्या विचारणा ॥१२३॥

संपूर्ण क्रूर कर्म और अनेक प्रकारके चरकर्म वे सब सूर्यकी नाडी (पिंगला) में सिद्ध होते हैं इसमें कोई विचार नहीं करना ॥ १२३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ सुषुम्ना ।

क्षणं वामे क्षणं दक्षे यदा वहति मारुतः ॥
सुषुम्ना सा च विज्ञेया सर्वकार्यहरा स्मृता ॥ १२४ ॥

जो पवन क्षणभर वाम भाग और क्षणभर दक्षिण भागमें चले वह नाडी सुषुम्ना जानना और सुषुम्ना सब कार्योंको हरनेवाली कही है ॥ १२४ ॥

तस्यां नाड्यां स्थितो वह्निर्ज्वलते कालरूपकः ॥
विषवत्तं विजानीयात्सर्वकार्यविनाशनम् ॥ १२५ ॥

उस नाडीमें टिकी हुई अग्नि कालरूप जलती है उस अग्निको विषवाली और सब कार्योंको नाशक जानना ॥ १२५ ॥

यदानुक्रममुल्लंघ्य यस्य नाडीद्वयं वहेत् ॥
तदा तस्या विजानीयादशुभं नात्र संशयः ॥ १२६ ॥

जब अपने २ स्वाभाविक क्रमका उल्लंघन करके जिस पुरुषकी दोनों नाडी चले तब उस पुरुषका अशुभ जानना इसमें संदेह नहीं है ॥ १२६ ॥

क्षणं वामे क्षणं दक्षे विषमं भावमादिशेत् ॥
विपरीतं फलं ज्ञेयं ज्ञातव्यं च वरानने ॥ १२७ ॥

क्षणभर वाम भाग और क्षणभर दक्षिण भागमें पवन चले तो उसको विषम कहे और हे पार्वती ! उसको विपरीत फल जानना ॥ १२७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उभयोरेव संचारं विषवंतं विदुर्बुधाः ॥
न कुर्यात्क्रूरसौम्यानि तत्सर्वं विफलं भवेत् ॥१२८॥
दोनों नाडियोंके संचारको विषवान् ऐसा पंडितजन कहते हैं उसमें क्रूर और सौम्य कर्म न करे, यदि करे तो वे सब निष्फल होते हैं ॥ १२८ ॥

जीविते मरणे प्रश्ने लाभालाभे जयाजये ॥
विषमे विपरीते च संस्मरेज्जगदीश्वरम् ॥ १२९ ॥
जीने, मरने, प्रश्न, लाभ, अलाभ, जय, पराजय, विषम और विपरीत स्वरके चलनेमें जगदीश्वरका स्मरण करे ॥ १२९ ॥

ईश्वरे चिंतिते कार्यं योगाभ्यासादिकर्म च ॥
अन्यत्तत्र न कर्त्तव्यं जयलाभसुखैषिभिः ॥ १३० ॥
ईश्वरका चिंतन करके उस समय योगाभ्यास आदि कर्मही करना और जय लाभ सुखके अभिलाषी उस समय और कोई काम न करे ॥ १३० ॥

सूर्येण वहमानायां सुषुम्नायां मुहुर्मुहुः ॥
शापं दद्याद्वरं दद्यात्सर्वथैव तदन्यथा ॥ १३१ ॥
जब सूर्यकी नाडी सुषुम्ना बार बार वहे तो उस समय जो शाप अथवा वर दे वह सब अन्यथा (विपरीत) होता है ॥ १३१ ॥

नाडीसंक्रमणे काले तत्त्वसंगमनेऽपि च ॥
शुभं किंचिन्न कर्त्तव्यं पुण्यदानानि कोटिधा ॥ १३२ ॥
नाडीके संचलन (मेल) के और तत्वोंके संचलनमें कोई शुभ कर्म न करना और पुण्य दान आदि कर्मभी न करने ॥ १३२ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषमस्योदयो यत्र मनसाऽपि न चिंतयेत् ॥
यात्रा हानिकरी तस्य मृत्युः क्लेशो न संशयः॥ १३३ ॥

जिस समय विषम स्वरका उदय हो तब मनसेभी किसी कार्यकी चिंता न करे जो करे उस मनुष्यकी यात्रा हानिकी करनेवाली होती है और मृत्यु अथवा क्लेश होता है इसमें संदेह नहीं है ॥ १३३ ॥

पुरो वामोर्ध्वतश्चंद्रो दक्षाधः पृष्ठतो रविः ॥
पूर्णरिक्तविवेकोऽयं ज्ञातव्यो देशिके सदा ॥ १३४ ॥

जब प्रथम वाम स्वर और पीछे चंद्रस्वर हो और फिर दक्षिण स्वरके पीछे सूर्यस्वरका उदय हो ये दोनों क्रम पूर्ण और रिक्त (खाली) सदैव पंडितोंको जानना चाहिये ॥ १३४ ॥

ऊर्ध्ववामाग्रतो दूतो ज्ञेयो वामपथि स्थितः ॥
पृष्ठे दक्षे तथाऽधस्तात्सूर्यवाहागतः शुभः ॥ १३५ ॥

वाम स्वरसे पीछे वा पहिले यदि आता हुआ दूत वाम भागमें स्थित हो और दक्षिण स्वरके पीछे वा पहिले आता हुआ दूत दक्षिण भागमें स्थित होय तो शुभ होता है ॥ १३५ ॥

अनादिर्विषमः संधिर्निराहारो निराकुलः ॥
परे सूक्ष्मे विलियेत सा संध्या सद्भिरुच्यते ॥ १३६ ॥

अनादि जो विषम संधि (सुषुम्ना) निराहार और निराकुल होकर पर सूक्ष्म ब्रह्ममें लीन हो जाय अर्थात् एकरस चलती हुई जिस सुषुम्नामें ब्रह्मकी प्राप्ति हो जाय उस सुषुम्नाको सज्जन संध्या कहते हैं ॥ १३६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न वेदं वेद इत्याहुर्वेदो वेदो न विद्यते ॥
परात्मा विद्यते येन स वेदो वेद उच्यते ॥ १३७ ॥

पंडित जन वेदको वेद नहीं कहते और वेद वेद हैंभी नहीं किंतु परात्मा जिससे जाना जाय वही ज्ञानियोंने वेद कहा है ॥ १३७॥

न संध्या संधिरित्याहुः संध्या संधिर्निगद्यते ॥
विषमः संधिगः प्राणः स संधिः संधिरुच्यते॥ १३८॥

संध्याको संधि पंडित जन नहीं कहते और न संध्याको संधि कह सकते हैं किंतु जब विषम संधिमें प्राण हो वही संधि कहाती है ॥ १३८ ॥

इति नाडीभेदः ।

श्रीदेव्युवाच ।

देवदेव महादेव सर्वसंसारतारक ॥
स्थितं त्वदीयहृदये रहस्यं वद मे प्रभो ॥ १३९ ॥

पार्वती बोली कि, हे देवोंके देव! हे महादेव!! हे सब संसार-तारक!!! जो रहस्य (गुप्त) आपके हृदयमें स्थित है हे प्रभो! वह मुझे कहो ॥ १३९ ॥

ईश्वर उवाच ।

स्वरज्ञानरहस्यात्तु न काचिच्चेष्टदेवता ॥
स्वरज्ञानरतो योगी स योगी परमो मतः ॥ १४० ॥

महादेव बोले कि, स्वरज्ञानके रहस्यसे परे कोई इष्टदेवता नहीं है, जो योगी स्वरके ज्ञानमें रहता है वही योगी परम माना है ॥ १४० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंचतत्त्वाद्भवेत्सृष्टिस्तत्त्वे तत्त्वं प्रलीयते ॥
पंचतत्त्वं परं तत्त्वं तत्त्वातीतं निरंजनम् ॥ १४१ ॥

पांच तत्वोंसे सृष्टि होती है और तत्वमेंही तत्व लीन होता है; पांच तत्वही परम तत्व हैं और निरंजन (ब्रह्म) तत्वोंसे अतीत (परे) है ॥ १४१ ॥

तत्त्वानां नाम विज्ञेयं सिद्धियोगेन योगिनाम् ॥
भूतानां दुष्टचिह्नानि जानातीह स्वरोत्तमः ॥ १४२ ॥

योगी जन सिद्धिके योगसे तत्वोंका नाम जाने जो मनुष्य स्वरोंकोही उत्तम समझता है वह सब प्राणियोंके दुष्ट चिह्नोंको जान सकता है ॥ १४२ ॥

पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च ॥
पंचभूतात्मकं विश्वं यो जानाति स पूजितः ॥ १४३ ॥

जो मनुष्य पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पंचभूतात्मक विश्वको जानता है वही पूजित होता है ॥ १४३ ॥

सर्वलोकस्थजीवानां न देहो भिन्नतत्त्वकः ॥
भूलोकात्सत्यपर्यंतं नाडीभेदः पृथक् पृथक् ॥ १४४ ॥

भूलोकसे सत्यलोकपर्यंत सब लोकमें स्थित जितने जीव हैं उनका देह भिन्न २ तत्वरूप नहीं है परंतु नाडीका भेद पृथक् २ है ॥ १४४ ॥

वामे वा दक्षिणे वापि उदयाः पंच कीर्तिताः ॥
अष्टधा तत्त्वविज्ञानं शृणु वक्ष्यामि सुंदरि ॥ १४५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वामभाग वा दक्षिण भागमें पांच २ उदय कहे हैं। हे सुंदरि ! उन तत्वोंका विज्ञान आठ प्रकारका मैं कहता हूं तू सुन॥ १४५॥

प्रथमे तत्त्वसंख्यानं द्वितीये श्वाससंधयः ॥
तृतीये स्वरचिह्नानि चतुर्थे स्थानमेव च ॥ १४६ ॥

प्रथम तत्वोंका संख्यान (गिनती), दूसरा भेद श्वासकी संधि, तीसरा भेद स्वरोंका चिह्न, चौथा भेद स्वरोंका स्थान॥ १४६॥

पंचमे तस्य वर्णाश्च षष्ठे तु प्राण एव च ॥
सप्तमे स्वादसंयुक्ता अष्टमे गतिलक्षणम् ॥ १४७ ॥

पांचवां भेद तत्वोंका रंग, छठे भेदमें प्राण, सातवेंमें स्वादका संयोग, आठवें भेदमें गतिके लक्षण ॥ १४७ ॥

एवमष्टविधं प्राणं विषुवंतं चराचरम् ॥
स्वरात्परतरं देवि नान्यथा त्वंबुजेक्षणे ॥ १४८ ॥

इस प्रकार चराचरमें व्यापक आठ प्रकारका प्राण होता है हे देवि ! स्वरसे परे अन्यथा (इतर) ज्ञान नहीं है ॥ १४८ ॥

निरीक्षितव्यं यत्नेन सदा प्रत्यूषकालतः ॥
कालस्य वंचनार्थाय कर्म कुर्वंति योगिनः ॥ १४९॥

प्रातःकालसे लेकर सदैव स्वरको देखना, क्योंकि योगिजन कालक्षेपके लिये कर्मोंको करते हैं परन्तु उनको स्वर और तत्वकी पहचान रहती है ॥ १४९ ॥

श्रुत्योरंगुष्ठकौ मध्यांगुल्यौ नासापुटद्वये ॥
वदनप्रांतके चान्यांगुलीर्दद्याच्च नेत्रयोः ॥ १५० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कानोंमें दोनों अंगूठे, दोनों नासिकाके पुटोंमें मध्यकी दोनों अंगुली, मुखके प्रान्तभाग (दोनों होंठोंके मेल) में और नेत्रोंमें शेष अंगुली अर्थात् नेत्रोंमें तर्जनी और अनामिका और कनिष्ठा मुखप्रातमें लगावे ॥ १५० ॥

अस्यांतस्तु पृथिव्यादितत्त्वज्ञानं भवेत्क्रमात् ॥
पीतश्वेतारुणश्यामैर्बिंदुभिर्निरुपाधिकम् ॥ १५१ ॥

इसके बीचमें पृथिवी आदि तत्वोंका ज्ञान क्रमसे पीत, श्वेत, अरुण (लाल) और श्याम बिंदुओंसे उपाधिरहित (स्पष्ट) होता है अर्थात् पृथिवीका पीतवर्ण, जलका श्वेत, तेजका लाल, वायुका श्याम और आकाशका चित्रवर्ण होता है ॥ १५१ ॥

दर्पणेन समालोक्य तत्र श्वासं विनिःक्षिपेत् ॥
आकारैस्तु विजानीयात्तत्वभेदं विचक्षणः ॥ १५२ ॥

दर्पणमें मुखको देखकर श्वासको छोडे और आकारोंको देखकर तत्वके भेदको पंडितजन जाने ॥ १५२ ॥

चतुरस्रं चार्धचंद्रं त्रिकोणं वर्त्तुलं स्मृतम् ॥
बिंदुभिस्तु नभो ज्ञेयमाकारैस्तत्त्वलक्षणम् ॥ १५३ ॥

चतुरस्र (चौकोर), अर्द्ध चंद्राकार, त्रिकोण (तिकोण), वर्तुल (गोल), बिंदुओंका आकार नेत्रोंके आगे दीखे तो आकाशतत्वका लक्षण जानना ॥ १५३ ॥

मध्ये पृथ्वी ह्यधश्चापश्चोर्ध्वं वहति चानलः ॥
तिर्यग्वायुप्रवाहश्च नभो वहति संक्रमे ॥ १५४ ॥

मध्यमें पृथ्वी, नीचे जल, ऊपर अग्नि और तिरछा वायुका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रवाह होता है और दो स्वरोंका संक्रम चलता होय तो आका-
शतत्वका चलना जानना ॥ १५४ ॥

आपः श्वेताः क्षितिः पीता रक्तवर्णो हुताशनः ॥
मारुतो नीलजीमूत आकाशः सर्ववर्णकः ॥१५५॥

जलोंका श्वेतवर्ण, पृथिवीका पीत, अग्निका रक्त, पवनका नीलमेघवर्ण और आकाश सब वर्णरूप होता है ॥ १५५ ॥

अब स्थानपरत्वसे तत्त्वज्ञान।

स्कंधद्वये स्थितो वह्निर्नाभिमूले प्रभंजनः ॥
जानुदेशे क्षितिस्तोयं पादांते मस्तके नभः ॥१५६॥

दोनों कंधोंपर अग्नि, नाभिके मूलमें पवन, जानु (गोडे) देशमें पृथ्वी, पाद (चरण) के अंतमें जल और मस्तकमें आ-
काशतत्व स्थित रहता है॥ १५६ ॥

अब स्वादसे तत्त्वज्ञानप्रकार।

माहेयं मधुरं स्वादे कषायं जलमेव च ॥
तीक्ष्णं तेजः समीरोऽम्ल आकाशं कटुकं तथा॥१५७॥

पृथ्वीका स्वर मीठा, जलका स्वर खारा, तेजका स्वर तीखा, पवनका स्वर अम्ल और आकाशका स्वर कटु (कडवा) होता है ॥ १५७ ॥

अब गतिसे तत्त्वज्ञान।

अष्टांगुलं वहेद्वायुरनलश्चतुरंगुलम् ॥
द्वादशांगुलि माहेयं वारुण षोडशांगुलम् ॥ १५८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायुका स्वर आठ अंगुल, अग्निका चार अंगुल, पृथ्वीका स्वर बारह अंगुल और जलका स्वर सोलह अंगुल चलता है॥ १५८॥

ऊर्ध्वे मृत्युरधः शांतिस्तिर्यगुच्चाटनं तथा ॥
मध्ये स्तंभं विजानीयान्नभः सर्वत्र मध्यमम्॥ १५९॥

ऊर्ध्व स्वर चले तो मृत्यु, नीचे स्वर चले तो शांति, तिरछा चले तो उच्चाटन, मध्यका स्वर चले तो स्तंभ (रोकना) ये काम करे और आकाशतत्व सब कार्योंमें मध्यम जानना॥ १५९॥

पृथिव्यां स्थिरकर्माणि चरकर्माणि वारुणे ॥
तेजसि क्रूरकर्माणि मारणोच्चाटनेऽनिले ॥ १६० ॥

पृथिवी तत्वमें स्थिर कार्य, जलमें चरकार्य, तेजमें क्रूर कार्य और मारुत (पवन) में मारण और उच्चाटन कर्म करनेसे सिद्ध होते हैं॥ १६०॥

व्योम्नि किंचिन्न कर्त्तव्यमभ्यसेद्योगसेवनम् ॥
शून्यता सर्वकार्येषु नात्र कार्या विचारणा ॥१६१॥

आकाशमें कुछ काम न करे किंतु योगके सेवनका अभ्यास करे और उसमें सब काम शून्य होते हैं इसमें विचार न करना॥ १६१॥

पृथ्वीजलाभ्यां सिद्धिः स्यान्मृत्युर्वह्नौ क्षयोऽनिले ॥
नभसो निष्फलं सर्वं ज्ञातव्यं तत्त्ववादिभिः ॥१६२॥

पृथ्वी और जल तत्वसे सिद्धि, वह्नि तत्वमें मृत्यु, पवनमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षय (नाश) और आकाश तत्वमें सब काम निष्फल ऐसा तत्त्ववादियोंको जानने योग्य है ॥ १६२ ॥

चिरलाभः क्षितेर्ज्ञेयस्तत्क्षणे तोयतत्त्वतः ॥
हानिः स्याद्वह्निवाताभ्यां नभसो निष्फलं भवेत् १६३

पृथ्वी तत्वसे अधिक लाभ हो, जल तत्वसे तत्क्षण लाभ हो, वायु और अग्नि तत्वसे हानि इस प्रकार आकाशतत्वसे निष्फल जानना ॥ १६३ ॥

पीतः शनैर्मध्यवाही हनुयावद्गुरुध्वनिः ॥
कवोष्णः पार्थिवो वायुः स्थिरकार्यप्रसाधकः॥१६४॥

पीतवर्ण और शनैः २ वा मध्यम चलनेवाला और हनु (ठोडी) पर्यंत जिसका शब्द गुरु (भारी) हो और जो किंचित् उष्ण हो ऐसे पृथिवीसंबंधी वायु (स्वर) को स्थिर कार्योंका साधक कहते हैं ॥ १६४ ॥

अधोवाही गुरुध्वानः शीघ्रगः शीतलस्थितः ॥
यः षोडशांगुलो वायुः स आपः शुभकर्मकृत् १६५

जो नीचेको वहे और जिसकी ध्वनि गुरु हो, जो शीघ्र चले और जिसकी स्थिति शीतल हो और जो सोलह अंगुल हो वह स्वर जलका होता है उसमें शुभ काम करने ॥ १६५ ॥

आवर्त्तगश्चात्युष्णश्च शोणाभश्चतुरंगुलः ॥
ऊर्ध्ववाही च यः क्रूरकर्मकारी स तैजसः ॥ १६६ ॥

जो आवर्त (भौं) तक चले, अत्यन्त उष्ण हो, लाल हो,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चार अंगुल हो और ऊपरको चले वह स्वर तेजका है उसमें क्रूर कर्म करने ॥ १६६ ॥

उष्णः शीतः कृष्णवर्णस्तिर्यग्गाम्यष्टकांगुलः ॥
वायुः पवनसंज्ञस्तु चरकर्मप्रसादकः ॥ १६७ ॥

जो शीतोष्ण हो, कृष्णवर्ण हो, तिरछा चले और आठ अंगुलका हो वह वायु (स्वर) पवनका है उसमें चर काम सिद्ध होते हैं ॥ १६७ ॥

यः समीरः समरसः सर्वतत्त्वगुणावहः ॥
आंबरं तं विजानीयाद्योगिनां योगदायकम् ॥ १६८ ॥

जो पवन (स्वर) एकरस और सब तत्वोंके गुणोंको वहे उस स्वरको आकाशका जाने और वही स्वर योगियोंको योगका दाता होता है ॥ १६८ ॥

पीतवर्णं चतुष्कोणं मधुरं मध्यमाश्रितम् ॥
भोगदं पार्थिवं तत्त्व प्रवाहे द्वादशांगुलम् ॥ १६९ ॥

जिसका वर्ण पीत हो, चौकोर हो, मधुर हो और मध्यमें वहे और जिसका बारह अंगुलका प्रवाह हो वह पृथिवीतत्व होता है और भोगका दाता होता है ॥ १६९ ॥

श्वेतमर्धेंदुसंकाशं स्वादु काषायमार्द्रकम् ॥
लाभकृद्वारुणं तत्त्वं प्रवाहे षोडशांगुलम् ॥ १७० ॥

जिसका वर्ण श्वेत हो, अर्धचंद्राकार हो, स्वादु हो, कषैला, आर्द्र (गीला) हो और सोलह अंगुलका जिसके प्रवाहका प्रमाण हो वह जलतत्व होता है और लाभको देता है ॥ १७० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रक्तं त्रिकोणं तीक्ष्णं च ऊर्ध्वभागप्रवाहकम् ॥
दीप्तं च तैजसं तत्त्वं प्रवाहे चतुरंगुलम् ॥ १७१ ॥

जिसका रंग रक्त हो, जो तिकोना हो; तीक्ष्ण हो, जिसका प्रवाह ऊपरको हो और जो प्रकाशमान हो, जिसका प्रमाण चार अंगुलका हो वह तत्व तेजसंबंधी जानना ॥ १७१ ॥

नीलं च वर्तुलाकारं स्वादाम्लं तिर्यगाश्रितम् ॥
चपलं मारुतं तत्त्वं प्रवाहेऽष्टांगुलं स्मृतम् ॥ १७२ ॥

जो नीला, गोल, स्वादमें खट्टा हो और तिरछा चलता हो, जो चपल हो और जिसका प्रवाह आठ अंगुलका हो वह तत्व पवनसंबंधी जानना ॥ १७२ ॥

वर्णाकारे स्वादवाहे अव्यक्तं सर्वगामिनाम् ॥
मोक्षदं नाभसं तत्त्वं सर्वकार्येषु निष्फलम् ॥ १७३ ॥

वर्ण, आकार, स्वाद और प्रवाहमें जिसकी गति अव्यक्त हो अर्थात् जिसमें सबका हेल मेल पाया जाय वह आकाशसंबंधी तत्व जानना वह सब कार्योंमें निष्फल होता है ॥ १७३ ॥

पृथ्वीजले शुभे तत्त्वे तेजो मिश्रफलोदयम् ॥
हानिमृत्युकरौ पुंसामशुभौ व्योममारुतौ ॥ १७४ ॥

पृथ्वीतत्व और जलतत्व शुभ होते हैं तेजके तत्वमें मिश्र (मध्यम) फल होता है और आकाश और वायु तत्वमें हानि व मृत्यु आदि अशुभ फल होते हैं ॥ १७४ ॥

आपूर्वपश्चिमे पृथ्वी तेजश्च दक्षिणे तथा ॥
वायुश्चोत्तरदिग्ज्ञेयो मध्ये कोणगतं नभः ॥ १७५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वसे लेकर पश्चिम पर्यंत पृथ्वीतत्व, दक्षिणमें तेजंतत्व उत्तर दिशामें वायुतत्व और मध्यकी दिशामें आकाशतत्व जानना ॥ १७५ ॥

चंद्रे पृथ्वी जले स्यातां सूर्येऽग्निर्वा यदा भवेत् ॥
तदा सिद्धिर्न संदेहः सौम्यासौम्येषु कर्मसु ॥ १७६ ॥

चंद्रमाके स्वरमें पृथ्वी और जलतत्व और सूर्यके स्वरमें अग्नितत्व जिस समय हो उस समयमें अच्छे और बुरे कर्मोंकी सिद्धि होती है इसमें संदेह नहीं है ॥ १७६ ॥

लाभः पृथ्वीकृतोऽह्नि स्यान्निशायां लाभकृज्जलम् ॥
वह्नौ मृत्युः क्षयो वायुर्नभःस्थानं दहेत्क्वचित् १७७॥

दिनमें पृथ्वीतत्वसे और रात्रिमें जलतत्वसे लाभ होता है, अग्नितत्वसे मृत्यु, वायुतत्वसे नाश और आकाशतत्वसे दाहभी कभी २ हो जाता है ॥ १७७ ॥

जीवितव्ये जये लाभे कृष्यां च धनकर्मणि ॥
मंत्रार्थे युद्धप्रश्ने च गमनागमने तथा ॥ १७८ ॥

जीवन, जय, लाभ, कृषि, धनका कर्म, मंत्रका कार्य, युद्धका कर्म, प्रश्न, गमन, आगमन इनमें पृथ्वीतत्व श्रेष्ठ होता है ॥ १७८ ॥

आयाति वारुणे तत्वे शत्रुरस्ति शुभं क्षितौ ॥
प्रयाति वायुतोऽन्यत्र हानिमृत्यू नभोऽनले ॥ १७९ ॥

यदि जलका तत्व होय तो शत्रुका आगमन समझना और पृथ्वीतत्वमें शुभ होता है, वायुतत्व हो तो शत्रु अन्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थानमें चला जायगा और आकाश व अग्नितत्व होय तो शत्रुकी हानि व मृत्यु होगी ॥ १७९ ॥

पृथिव्यां मूलचिंता स्याज्जीवस्य जलवातयोः ॥
तेजसा धातुचिंता स्याच्छून्यमाकाशतो वदेत् १८०

यदि किसीके पूछनेके समय पृथ्वीतत्व होय तो मूल (वृक्ष आदि) की चिंता, जल व वायुतत्वमें जीवकी चिंता, तेजके तत्वमें धातुचिंता समझनी और आकाशतत्वमें शून्य कहे अर्थात् किसीकी चिंता न कहे ॥ १८० ॥

पृथिव्यां बहुपादाः स्युर्द्विपदस्तोयवायुतः ॥
तेजस्येव चतुष्पादो नभसा पादवर्जितः ॥ १८१ ॥

पृथ्वीतत्व होय तो बहुत पादोंसे गमन होता है अर्थात् बहुतोंके संग गमन करेगा, जल और वायुतत्व होय तो पादोंसे (अकेला) गमन कहे, तेजतत्व होय तो चार पदोंसे (दो मनुष्यसे) गमन करेगा और आकाशतत्व होय तो पादोंसे रहित कहे अर्थात् कहींभी न जायगा ऐसे कहे ॥ १८१ ॥

कुजो वह्नी रविः पृथ्वी सौरिरापः प्रकीर्तितः ॥
वायुस्थानास्थितो राहुर्दक्षरंध्रप्रवाहकः ॥ १८२ ॥

अग्नितत्वमें मंगल, पृथ्वीतत्वमें सूर्य, जलतत्वमें शनैश्चर और वायुतत्वमें राहु तब जानना यदि दक्षिण स्वर चलता हो १८२

जलं चंद्रो बुधः पृथ्वी गुरुर्वातः सितोऽनलः ॥
वामनाड्यां स्थिताः सर्वे सर्वकार्येषु निश्चिताः १८३

यदि वामस्वर वहता होय तो जलतत्वमें चंद्रमा, पृथ्वीतत्वमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुध, पवनतत्वमें बृहस्पति और अग्नितत्वमें शुक्र जानना ये संपूर्ण ग्रह सर्वकार्योंमें इन पूर्वोक्त तत्वोंमें निश्चयसे स्थित रहते हैं॥ १८३ ॥

पृथ्वी बुधो जलादिंदुः शुक्रो वह्नी रविः कुजः ॥
वायू राहुशनी व्योम गुरुरेव प्रकीर्त्तितः ॥ १८४ ॥

पृथ्वीतत्वमें बुध, जलतत्वमें चंद्रमा, अग्नितत्वमें सूर्य, मंगल, वायुतत्वमें राहु शनैश्वर और आकाशतत्वमें बृहस्पति कहा है॥ १८४ ॥

प्रवासप्रश्न आदित्ये यदि राहुर्गतोऽनिले ॥
तदासौ चलितो ज्ञेयः स्थानांतरमपेक्षते ॥ १८५ ॥

यदि कोई मनुष्य परदेशमें गये हुएका प्रश्न करे और उस समय सूर्यके स्वरमें राहु स्थित होय तो यह कहे कि वह परदेशी अन्यत्र जानेके लिये उस स्थानसे चल दिया॥ १८५ ॥

आयाति वारुणे तत्वे तत्रैवास्ति शुभं क्षितौ ॥
प्रवासी पवनेऽन्यत्र मृत्युरेवानले भवेत् ॥ १८६ ॥

यदि प्रश्न करनेके समय जलतत्त्व वहता होय तो परदेशीके आगमनको कहे, पृथ्वीतत्व होय तो परदेशी जहां गया हो वहांही सुखी है ऐसे कहे वायुतत्व होय तो अन्य स्थानमें चला गया ऐसे कहे और अग्नितत्व होय तो परदेशी मर गया ऐसे कहे॥ १८६ ॥

पार्थिवे मूलविज्ञानं शुभं कार्यं जले तथा ॥
आग्नेये धातुविज्ञानं व्योम्नि शून्यं विनिर्दिशेत्॥ १८७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृथ्वीतत्वमें मूल (वृक्ष आदि) का जानना, जलतत्वमें शुभकार्य, अग्नितत्वमें धातुओंका ज्ञान और आकाशतत्वमें शून्यको कहे अर्थात् किसीके ज्ञानको न कहे ॥ १८७ ॥

तुष्टिः पुष्टी रतिः क्रीडा जयहर्षौ धराजले ॥
तेजोवाय्वोश्च सुप्ताक्षो ज्वरकंपः प्रवासिनः ॥१८८॥

यदि परदेशीके प्रश्नके समयमें पृथ्वी व जलतत्व होय तो संतोष, पुष्टता, प्रीति, रति, क्रीडा, जय और हर्ष (आनंद) और यदि तेज व वायुतत्व होय तो सोना, ज्वरसे कंप परदेशीको कहा है ॥ १८८ ॥

गतायुर्मृत्युराकाशे तत्त्वस्थाने प्रकीर्तिताः ॥
द्वादशैताः प्रयत्नेन ज्ञातव्या दैशिकैः सदा ॥१८९॥

यदि आकाशतत्व होय तो अवस्थासे रहित परदेशीकी मृत्युको कहे, ये बारह प्रश्न तत्वोंके स्थानमें कहे हैं इनको पंडितजन बडे यत्नसे सदैव जाने ॥ १८९ ॥

पूर्वायां पश्चिमे याम्ये उत्तरस्यां यथाक्रमम् ॥
पृथिव्यादीनि भूतानि बलिष्ठानि विनिर्दिशेत् ॥१९०॥

पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर इन चारों दिशाओंमें क्रमसे पृथिवी, जल, तेज और वायु ये चारों तत्व बलवान् हैं ॥१९०॥

पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च ॥
पंचभूतात्मको देहो ज्ञातव्यश्च वरानने ॥ १९१ ॥

हे पार्वति ! पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश इन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पांचों भूतरूपही यह देह जानना अर्थात् इन पांच भूतोंसेही पैदा होता है ॥ १९१ ॥

अस्थि मांसं त्वचा नाडी रोम चैव तु पंचमम् ॥
पृथ्वी पंचगुणा प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषितम् ॥ १९२ ॥

इस देहमें अस्थि (हाड), मांस, त्वचा, नाडी और पांचवां रोम ये पांच गुण पृथिवीके हैं यह बात वेदांतशास्त्रके ज्ञाता ब्रह्मज्ञानी कहते हैं ॥ १९२ ॥

शुक्रशोणितमज्जाश्च मूत्रं लालं च पंचमम् ॥
आपः पंच गुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषितम् १९३॥

ब्रह्मज्ञानी कहते हैं कि वीर्य, रुधिर, मज्जा, मूत्र और पांचवीं लाल ये पांच गुण जलोंके कहे हैं ॥ १९३ ॥

क्षुधा तृषा तथा निद्रा कांतिरालस्यमेव च ॥
तेजः पंचगुणं प्रोक्तं ब्रह्मज्ञानेन भाषितम् ॥ १९४ ॥

ब्रह्मज्ञानियोंका कथन है कि क्षुधा, तृषा, निद्रा, कांति और आलस्य ये पांच गुण तेजके कहे हैं ॥ १९४ ॥

धावनं चलनं ग्रंथः संकोचनप्रसारणे ॥
वायोः पंच गुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषितम् १९५॥

वेदांती कहते हैं कि दौडना, चलना, गांठ देना, सकोडना व पसारना ये पांच गुण वायुके कहे हैं ॥ १९५ ॥

रागद्वेषौ तथा लज्जा भयं मोहश्च पंचमः ॥
नभः पंचगुणं प्रोक्तं ब्रह्मज्ञानेन भाषितम् ॥ १९६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेदांतशास्त्रके जाननेवालोंका कथन है प्रीति, वैर, लज्जा, भय और पांचवां मोह ये पांच गुण आकाशके इस देहमें हैं ॥ १९६ ॥

पृथ्व्याः पलानि पंचाशच्चत्वारिंशत्तथांभसः ॥
अग्नेस्त्रिंशत्पुनर्वायोर्विंशतिर्नभसो दश ॥ १९७ ॥

इस देहमें पृथ्वी पचास पल, जल चालीस पल, अग्नि तीस पल, वायु वीस पल और आकाश दस पल होते हैं अर्थात् पृथ्वी आदि तत्वोंमें अगला २ तत्व क्रमसे दश २ पल कम होता है ॥ १९७ ॥

पृथिव्यां चिरकालेन लाभश्चापः क्षणाद्भवेत् ॥
जायते पवने स्वल्पः सिद्धोऽप्यग्नौ विनश्यति ॥ १९८ ॥

पृथ्वी तत्व होय तो चिरकाल (बहु दिनों) में लाभ और जल तत्व होय तो उसी क्षणमें और पवन तत्व होय तो थोडा लाभ होता है और अग्नि तत्व होय तो सिद्ध हुआभी कार्य नष्ट हो जाता है ॥ १९८ ॥

पृथ्व्याः पंच ह्यपां वेदा गुणास्तेजो द्विवायुतः ॥
नभस्येकगुणश्चैव तत्त्वज्ञानमिदं भवेत् ॥ १९९ ॥

पृथ्वीके पांच गुण, जलोंके चार गुण, तेजके तीन गुण, वायुके दो गुण और आकाशका एक गुण जानना यही तत्वोंका ज्ञान होता है ॥ १९९ ॥

फूत्कारकृत्प्रस्फुटिता विजीर्णा पतिता धरा ॥
ददाति सर्वकार्येषु अवस्थासदृशं फलम् ॥ २०० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फूत्कार करनेवाली, फूटी हुई, फटी और वृथा पडी हुई पृथ्वी सब कार्योंमें अपनी अवस्थाके समान फल देतीहै ॥ २०० ॥

धनिष्ठा रोहिणी ज्येष्ठानुराधा श्रवणं तथा ॥
अभिजिदुत्तराषाढा पृथ्वीतत्त्वमुदाहृतम् ॥ २०१ ॥

धनिष्ठा, रोहिणी, ज्येष्ठा, अनुराधा, श्रवण, अभिजित और उत्तराषाढा ये सात नक्षत्र पृथ्वीतत्व कहे हैं ॥ २०१ ॥

पूर्वाषाढा तथाश्लेषा मूलमार्द्रा च रेवती ॥
उत्तराभाद्रपदा तोयं तत्त्वं शतभिषक् प्रिये ॥ २०२ ॥

पूर्वषाढा, आश्लेषा, मूल, आर्द्रा, रेवती, उत्तराभाद्रपदा और शतभिषा ये सात नक्षत्र जलतत्त्व कहे हैं ॥ २०२ ॥

भरणी कृत्तिका पुष्यो मघा पूर्वा च फाल्गुनी ॥
पूर्वाभाद्रपदा स्वाती तेजस्तत्वमिति प्रिये ॥ २०३ ॥

भरणी, कृत्तिका, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा और स्वाती ये सात नक्षत्र तेजस्तत्व हैं ॥ २०३ ॥

विशाखोत्तरफाल्गुन्यौ हस्ताचित्रे पुनर्वसु ॥
अश्विनीमृगशीर्षं च वायुतत्त्वमुदाहृतम् ॥ २०४ ॥

विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, पुनर्वसु, अश्विनी और मृगशिर ये सात वायुतत्त्व कहे हैं ॥ २०४ ॥

वहन्नाडीस्थितो दूतो यत्पृच्छति शुभाशुभम् ॥
तत्सर्वं सिद्धिमाप्नोति शून्ये शून्यं न संशयः ॥ २०५ ॥

वहती हुई नाडीकी तरफ बैठा हुआ जो दूत शुभ व अशुभ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूछे वह सब सिद्ध होता है और शून्यमें पूछे तो शून्य होता है इसमें संदेह नहीं है ॥ २०५ ॥

पूर्णोऽपि निर्गमश्वासे सुतत्त्वेऽपि न सिद्धिदः ॥
सूर्यश्चंद्रोऽथवा नृणां संग्रहे सर्वसिद्धिदः ॥ २०६ ॥

पूर्णभी सूर्यतत्त्व अथवा चंद्रतत्त्व श्वासमें वहता होय तो सिद्धिका दाता नहीं होता। यदि दोनों तत्वोंका संग्रह (मेल) होय तो संपूर्ण सिद्धियोंको देता है ॥ २०६ ॥

तत्त्वे रामो जयं प्राप्तिः सुतत्त्वे च धनंजयः ॥
कौरवा निहताः सर्वे युद्धे तत्त्वविपर्ययात् ॥२०७ ॥

श्रेष्ठ तत्वमेंही रामचंद्रकी जय हुई है, श्रेष्ठ तत्वमेंही अर्जुनकी जय हुई और तत्वोंके विपरीत होनेसे संपूर्ण कौरव युद्धमें मारे गये ॥ २०७ ॥

जन्मांतरीयसंस्कारात्प्रसादादथवा गुरोः ॥
केषांचिज्जायते तत्त्ववासना विमलात्मनाम् ॥२०८ ॥

जन्मांतरके संस्कारसे अथवा गुरुके प्रसादसे किन्ही निर्मल आत्माओंको तत्वोंकी वासना (ज्ञान) होती है ॥ २०८ ॥

लं बीजं धरणीं ध्यायेच्चतुरस्रां सुपीतभाम् ॥
सुगंधं स्वर्णवर्णाभां प्राप्नुयाद्देहलाघवम् ॥ २०९ ॥

लं यह बीज पृथ्वीतत्वमें चतुरस्र (चौकोर), सुवर्णके समान प्रकाशमान, पीत वर्ण, सुगंध ध्यान करना और ध्यानका करनेवाला कांति व देहके लाघवको प्राप्त होता है ॥ २०९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वं बीजं वारुणं ध्यायेत्तत्त्वमर्धशशिप्रभम् ॥
क्षुत्तृष्णादिसहिष्णुत्वं जलमध्ये च मज्जनम् ॥२१०॥

वं यह बीज जलतत्वमें ध्यान करने योग्य है और अर्द्ध चंद्रके समान इसका आकार है, इसके ध्यान करनेवालेको क्षुधा और तृषाकी बाधा नहीं होती और जलमें डूबनेकी सामर्थ्य होती है अर्थात् डूबनेसे दुःख नहीं होता ॥ २१० ॥

रं बीजमग्निजं ध्यायेत्त्रिकोणमरुणप्रभम्॥
बह्वन्नपानभोक्तृत्वमातपाग्निसहिष्णुता ॥ २११ ॥

रं यह बीज अग्नितत्वमें तिकोना, रक्त वर्ण ध्यान करने योग्य है इसके ध्यान करनेवालेको बहुत अन्नपान भक्षण करनेकी सामर्थ्य होती है और धूप और अग्निके वेगको सह सकता है ॥ २११ ॥

यं बीजं पावनं ध्यायेद्वर्तुलं श्यामलप्रभम् ॥
आकाशगमनाद्यं च पक्षिवद्गमनं तथा ॥ २१२ ॥

यं यह बीज पवनतत्वमें ध्यान करने योग्य है वर्तुल (गोल) और श्याम रंग होता है इसके ध्यान करनेवाला आकाशमें गमन और पक्षियोंके समान गमन कर सकता है ॥ २१२ ॥

हं बीज गगनं ध्यायेन्निराकारं बहुप्रभम् ॥
ज्ञानं त्रिकालविषयमैश्वर्यमणिमादिकम् ॥ २१३ ॥

हं यह बीज आकाशतत्वमें ध्यान करने योग्य है, जो निराकार और अधिक कांतिवाला है इसके ध्यान करनेवालेको त्रिकाल (भूत, भविष्यत्, वर्तमान) का ज्ञान और अणिमा आदि आठ सिद्धि होती हैं ॥ २१३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वरज्ञानी नरो यत्र धनं नास्ति ततः परम् ॥
गम्यते स्वरज्ञानेन अनायासं फलं भवेत् ॥ २१४ ॥

जिस स्थानमें स्वरका ज्ञानी हो उससे परे और कोई धन नहीं है । जो मनुष्य स्वरके ज्ञानसे गमन करता है उसको अनायास (विना परिश्रम) से फल मिलता है ॥ २१४ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

देवदेव महादेव महाज्ञानं स्वरोदयम् ॥
त्रिकालविषयं चैव कथं भवति शंकर ॥ २१५ ॥

पार्वती बोली कि, हे देवताओंके देव महादेव ! हे शंकर ! यह महान् (बडा) स्वरोदयका त्रिकाल (भूत भविष्यत् वर्तमान) विषयक ज्ञान किस प्रकार होताहै ॥ २१५ ॥

ईश्वर उवाच ।

अर्थकालजयप्रश्नशुभाशुभमिति त्रिधा ॥
एतत्रिकालविज्ञानं नान्यद्भवति सुंदरि ॥ २१६ ॥

महादेव बोले कि हे सुंदरि ! अर्थ (प्रयोजन वा धन), भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालोंका जय प्रश्न शुभ अशुभ (पराजय आदि) का जो तीनों कालोंमें ज्ञान है उसका कारण स्वरोदय है अन्य नहीं ॥ २१६ ॥

तत्वे शुभाशुभं कार्यं तत्वे जयपराजयौ ॥
तत्वे सुभिक्षदुर्भिक्षे तत्वं त्रिपदमुच्यते ॥ २१७ ॥

तत्वकेही आधीन शुभ अशुभ कार्य हैं, तत्वके आधीन जय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और पराजय हैं और तत्वोंकेही आधीन सुभिक्ष और दुर्भिक्ष हैं इस प्रकार तत्वकोही त्रिपद (तीनों कालोंके कार्योंका कर्त्ता) कहते हैं ॥ २१७ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

देवदेव महादेव सर्वसंसारसागरे ॥
किं नराणां परं मित्रं सर्वकार्यार्थसाधकम् ॥ २१८ ॥

पार्वती बोली कि, हे देवताओंके देव महादेव ! इस संपूर्ण संसारसमुद्रमें मनुष्योंका परम मित्र और मनुष्योंके सब कार्योंका साधक क्या है सो कहो ॥ २१८ ॥

ईश्वर उवाच ।

प्राण एव परं मित्रं प्राण एव परः सखा ॥
प्राणतुल्यः परो बंधुर्नास्ति नास्ति वरानने ॥ २१९ ॥

महादेव बोले कि, हे सुंदरमुखी पार्वति ! प्राणही परम मित्र है और सखा है, प्राणके समान अन्य और बंधु नहीं है नहीं है ॥ २१९ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

कथं प्राणस्थितो वायुर्देहः किं प्राणरूपकः ॥
तत्वेषु संचरन्प्राणो ज्ञायते योगिभिः कथम् ॥ २२० ॥

पार्वती बोली कि, प्राणमें वायु किस प्रकार स्थित है और क्या देह प्राणरूप है और तत्वोंके विषय विचारते हुए प्राणको योगिजन किस प्रकार जान जाते हैं ॥ २२० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीशिव उवाच ।

कायानगरमध्यस्थो मारुतो रक्षपालकः ॥
प्रवेशे दशभिः प्रोक्तो निर्गमे द्वादशांगुलः ॥ २२१ ॥

शिवजी बोले कि, हे पार्वति ! इस कायारूपी नगरमें टिका हुआ प्राणवायु रक्षपाल (चौकीदार) है और वह प्राण प्रवेशके समय दश अंगुल और निकसनेके समय बारह अंगुलका कहा है ॥ २२१ ॥

गमने तु चतुर्विंशन्नेत्रवेदास्तु धावने ॥
मैथुने पंचषष्टिश्च शयने च शतांगुलम् ॥ २२२ ॥

गमनके समय चौवीस अंगुलका, धावन (दौडने) के समय बियालीस अंगुलका, मैथुनके समय पैंसठ अंगुल और सोनेके समयमें सौ अंगुलका कहा है ॥ २२२ ॥

प्राणस्य तु गतिर्देवि स्वभावाद्द्वादशांगुलम् ॥
भोजने वचने चैव गतिरष्टादशांगुलम् ॥ २२३ ॥

हे देवि ! प्राणकी स्वाभाविक गति बारह अंगुल है और भोजन और वमनके समय प्राणकी गति अठारह अंगुल हो जाती है ॥ २२३ ॥

एकांगुलं कृते न्यूने प्राणे निष्कामता मता ॥
आनंदस्तु द्वितीये स्यात्कविशक्तिस्तृतीयके २२४॥

यदि प्राणकी गति एक अंगुल कम योगी कर ले तो निष्कामताकी प्राप्ति होती है, दो अंगुल कम कर ले तो आनंदकी प्राप्ति और तीन अंगुल कम करनेसे कविताकी प्राप्ति होतीहै ॥२२४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाचासिद्धिश्चतुर्थे च दूरदृष्टिस्तु पंचमे ॥
षष्ठे त्वाकाशगमनं चंडवेगश्च सप्तमे ॥ २२५ ॥

चार अंगुल कम कर ले तो वाणीकी सिद्धि, पांच अंगुल कम कर ले तो दूरदृष्टि, छः अंगुल कम कर ले तो आकाशगमनमें शक्ति और सात अंगुल कम कर ले तो प्रचंड वेग होजाताहै ॥२२५॥

अष्टमे सिद्धयश्चैव नवमे निधयो नव ॥
दशमे दश मूर्तीश्च छाया नैकादशे भवेत् ॥ २२६॥

आठ अंगुल कम कर ले तो अणिमा आदि सिद्धियोंकी प्राप्ति, नौ अंगुल कम करनेसे नौ निधियोंकी प्राप्ति, दश अंगुल कम होनेसे दशों मूर्तियों (अनेकरूप) की प्राप्ति और ग्यारह अंगुल कम होनेसे देहकी छायाका अभाव प्राप्त होता है ॥ २२६ ॥

द्वादशे हंसचारश्च गंगामृतरसं पिबेत् ॥
आनखाग्रं प्राणपूर्णे कस्य भक्ष्यं च भोजनम् २२७॥

बारह अंगुल प्राणकी गति कम हो जाय तो हंसगति गंगाजलके समान अमृतरसका पान प्राप्त होता है। यदि शिखासे लेकर नखपर्यंत प्राणोंको पूर्ण योगी कर ले तो भक्ष्य और भोजन किसको अर्थात् भक्ष्य भोजनकी निवृत्ति हो जाती है ॥२२७॥

एवं प्राणविधिः प्रोक्तः सर्वकार्यफलप्रदः ॥
जायते गुरुवाक्येन न विद्याशास्त्रकोटिभिः ॥२२८॥

इस प्रकार संपूर्ण कार्योंके फल देनेवाली प्राणकी विधि कही है और जिसका ज्ञान गुरुके वाक्यसे होता है, विद्या और कोटिभी ग्रंथोंसे नहीं होता ॥ २२८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रातश्चंद्रो रविः सायं यदि दैवान्न लभ्यते ॥
मध्याह्नान्मध्यरात्राच्च परतस्तु प्रवर्तते ॥ २२९ ॥

यदि प्रातःकाल चन्द्रस्वर और सायंकालको सूर्य स्वर दैववश न मिले तो मध्याह्न अथवा आधी रात्रिसे परे प्रवृत्त होते हैं अर्थात् मिलते हैं ॥ २२९ ॥

दूरयुद्धे जयी चंद्रः समासन्ने दिवाकरः ॥
वहन्नाड्यगतः पादः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ २३० ॥

यदि दूर देशमें युद्ध कर्तव्य होय तो चंद्रमाका स्वर जयकारी होता है और समीपके युद्धमें सूर्यका स्वर जयकारी होता है। यदि वहती हुई नाडीके समय गमनकालमें पैर रक्खा जाय तो सब सिद्धियोंको देता है ॥ २३० ॥

यात्रारंभे विवाहे च प्रवेशे नगरादिके ॥
शुभकार्याणि सिद्ध्यंति चंद्रचारेषु सर्वदा ॥ २३१ ॥

यात्राके आरंभमें, विवाह, गृह वा नगरप्रवेश आदि संपूर्ण शुभ कर्म चंद्रस्वरके चारमें सदैव होते हैं ॥ २३१ ॥

अयनतिथिदिनेशैः स्वीयतत्वे च युक्ते
यदि वहति कदाचिद्दैवयोगेन पुंसाम् ॥
सजयति रिपुसैन्यं स्तंभमात्रस्वरेण
प्रभवति न च विघ्नं केशवस्यापि लोके ॥ २३२ ॥

अयन, तिथि, वार इनके स्वामियोंसे युक्त पुरुषोंमें अपना स्वर वा तत्व दैवयोगसे वहे तो वह पुरुष शत्रुकी सेनाको स्वरके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्तंभ (रोकना) मात्रसेही जीतता है और वैकुंठलोकमेंभी उसको विघ्न नहीं होता ॥ २३२ ॥

जीवं रक्ष जीवं रक्ष जीवाङ्गे परिधाय च ॥
जीवो जपति यो युद्धे जीवन् जयति मेदिनीम् २३३॥

जीव (अपने) अंगपर वस्त्रोंको पहिरकर जो जीव ' जीवं रक्ष जीवं रक्ष ' युद्धमें ऐसे जपता है वह पुरुष जीवता हुआ संपूर्ण पृथिवीको जीतता है ॥ २३३ ॥

भूमौ जले च कर्त्तव्यं गमनं शांतिकर्मसु ॥
वह्नौ वायौ प्रदीप्तेषु खे पुनर्नोभयेष्वपि ॥ २३४ ॥

शांतिके कर्मोंमें अग्नि पृथ्वी या जलतत्वमें गमन करे प्रदीप्त (उग्र) कर्मोंमें अग्नि और वायुतत्वमें गमन करे और आकाशतत्वमें पूर्वोक्त दोनों प्रकारके कर्मोंमें गमन न करे ॥ २३४ ॥

जीवेन शस्त्रं बध्नीयात् जीवेनैव विकाशयेत् ॥
जीवेन प्रक्षिपेच्छस्त्रं युद्धे जयति सर्वदा ॥ २३५ ॥

जीवस्वरमें शस्त्रको बांधे अर्थात् जिस तरफका स्वर चले उसी हाथके शस्त्रको धारण करे और जीवस्वरसेही शस्त्रको खोले और जीवस्वरमेंही शस्त्रको जो फेंके वह मनुष्य युद्धमें सदैव जयको प्राप्त होता है ॥ २३५ ॥

आकृष्य प्राणपवनं समारोहेत वाहनम् ॥
समुत्तरे पदं दद्यात्सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ २३६ ॥

जो मनुष्य प्राणवायुको खींचकर अश्व आदि सवारीपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चढे और पवनके उतारपर घोडेकी रकाबमें पैर रक्खे वह संपूर्ण कार्योंको सिद्ध करेगा ॥ २३६ ॥

अपूर्णे शत्रुसामग्री पूर्णे वा स्वबलं तथा ॥
कुरुते पूर्णतत्वस्थो जयत्येको वसुंधराम् ॥ २३७ ॥

यदि अपूर्ण स्वरमें शत्रुकी सामग्री और संपूर्ण स्वरमें अपनी सामग्रीका बल होय तो पूर्णतत्वमें इस प्रकार टिका हुआ पुरुष अकेलाभी पृथिवीको जीतता है ॥ २३७ ॥

या नाडी वहते चांगे तस्यामेवाधिदेवता ॥
सन्मुखेऽपि दिशा तेषां सर्वकार्यफलप्रदा ॥ २३८ ॥

अपने अंगमें जो नाडी (स्वर) वहती हो और उसी नाडीमें उस नाडीकी देवता और उनकी दिशा सन्मुख होय तो सब कार्योंका फल देती है ॥ २३८ ॥

आदौ तु क्रियते मुद्रा पश्चाद्युद्धं समाचरेत् ॥
सर्पमुद्रा कृता येन तस्य सिद्धिर्न संशयः ॥ २३९ ॥

मनुष्य पहिले मुद्राको करे और पश्चात् युद्ध करे जो मनुष्य सर्पमुद्रा करता है उसकी सिद्धि होती है इसमें संशय नहीं है २३९॥

चंद्रप्रवाहेऽप्यथ सूर्यवाहे भटाः समायांति च
योद्धुकामाः ॥ समीरणस्तत्वविदां प्रतीतो
या शून्यता सा प्रतिकार्यनाशम् ॥ २४० ॥

चंद्रस्वरके अथवा सूर्यस्वरके चलनेके समय यदि समीरण (वायुतत्व) वहता हो और तत्वके ज्ञाताओंको वहता हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतीत हो जाय तो युद्ध करनेके लिये भट (योद्धा) भली प्रकार आवेंगे और शून्यता हो अर्थात् वायु वा आकाशतत्व वहते हों तो कार्यका नाश होता है॥ २४० ॥

यां दिशं वहते वायुर्युद्धं तद्दिशि दापयेत् ॥
जयत्येव न संदेहः शक्रोऽपि यदि चाग्रतः ॥ २४१ ॥

जिस दिशाको पवनतत्व चलता हो उसी दिशामें युद्धके लिये सेनाको भेजे तो चाहे आगे इंद्रभी हो तोभी जय होगी इसमें संदेह नहीं है ॥ २४१ ॥

यत्र नाड्यां वहेद्वायुस्तदंगे प्राणमेव च ॥
आकृष्य गच्छेत्कर्णांतं जयत्येव पुरंदरम् ॥ २४२ ॥

जिस नाडीका पवनतत्व वहता हो उसी नाडीके पवनको कर्णपर्यंत आकर्षण (खींच) करके गमन करे तो पुरंदर (इंद्र) कोभी जीत सकता है ॥ २४२ ॥

प्रतिपक्षप्रहारेभ्यः पूर्णांगं योऽभिरक्षति ॥
न तस्य रिपुभिः शक्तिर्बलिष्ठैरपि हन्यते ॥ २४३ ॥

जो योद्धा प्रतिपक्ष (शत्रु) के प्रहारोंसे अपने संपूर्ण अंगोंकी रक्षा करता है उस योद्धाकी शक्तिको बलवान् शत्रुभी नष्ट नहीं कर सकते ॥ २४३ ॥

अंगुष्ठतर्जनीवंशे पादांगुष्ठे तथा ध्वनिः ॥
युद्धकाले च कर्त्तव्यो लक्षयोद्धृजयी भवेत् ॥२४४॥

अंगूठा और तर्जनी अंगुलि इनके वंशमें और चरणके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंगूठेमें युद्धके समय जो ध्वनि (शब्द) करे तो लक्ष योद्धा ओंको जीत सकता है ॥ २४४ ॥

निशाकरे रवौ चारे मध्ये यस्य समीरणः ॥
स्थितो रक्षेद्दिगंतानि जयकांक्षी गतः सदा ॥२४५ ॥

चंद्रमा वा सूर्यके प्रवाहमें यदि वायुतत्व वहे तो उस समय गमन करनेवाला दिगंतोंकी रक्षा करता है और सदैव जयको पाता है ॥ २४५ ॥

श्वासप्रवेशकाले तु दूतो जल्पति वांछितम् ॥
तस्यार्थः सिद्धिमायाति निर्गमेनैव सुंदरि ॥ २४६ ॥

जिस मनुष्यके श्वासके प्रवेशसमयमें दूर अपने मुखसे वांछित बातको कहे तो हे सुंदरि ! गमन करतेही उस मनुष्यका अर्थ सिद्ध होता है ॥ २४६ ॥

लाभादीन्यपि कार्याणि पृष्टानि कीर्तितानि च ॥
जीवे विशति सिद्ध्यंति हानिर्निःसारणे भवेत्२४७॥

पूछे और कहे हुए लाभ आदि संपूर्ण कार्य जीवनाडीके प्रवेशसमयमें सिद्ध होतेहैं और निकसनेके समयमें नष्ट होते हैं॥२४७॥

नरे दक्षा स्वकीया च स्त्रियां वामा प्रशस्यते ॥
कुंभको युद्धकाले च तिस्रो नाड्यस्त्रयीगतिः॥२४८॥

पुरुषोंकी अपने दक्षिण नाडी और स्त्रियोंकी वाम नाडी और युद्धके समयमें कुंभक नाडी श्रेष्ठ होती है इस प्रकार तीन नाडी हैं और तीनही उनकी गति हैं ॥ २४८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हकारस्य सकारस्य विना भेदं स्वरः कथम् ॥
सोहं हंसपदेनैव जीवो जयति सर्वदा ॥ २४९ ॥

हकार और सकारके भेद विना स्वरज्ञान कैसे हो सकता है इससे जीव सोहं और हंस इन दो पदोंसेही सर्वदा जयको प्राप्त होता है ॥ २४९ ॥

शून्यांगं पूरितं कृत्वा जीवांगे गोपयेज्जयम् ॥
जीवांगे घातमाप्नोति शून्यांगं रक्षते सदा ॥ २५० ॥

शून्य अंगको पूर्ण करके जीवांगकी रक्षा करनेसे जय प्राप्त होता है क्योंकि जीवांगमें घात (नाश) को प्राप्त होता है और शून्यांग सदैव रक्षा करता है ॥ २५० ॥

वामे वा यदि वा दक्षे यदि पृच्छति पृच्छकः ॥
पूर्णे घातो न जायेत शून्ये घातं विनिर्दिशेत् ॥२५१॥

यदि प्रश्नका कर्ता वाम वा दक्षिणकी तरफ बैठा हुआ युद्धका प्रश्न करे और उस समय पूर्ण स्वर होय तो नाश न होगा और शून्य होय तो घात होगा यह कहे ॥ २५१ ॥

भूतत्वेनोदरे घातः पदस्थानेऽम्बुना भवेत् ॥
ऊरुस्थानेऽग्नितत्वेन करस्थाने च वायुना ॥२५२॥

प्रश्नके समय पृथ्वीतत्व होय तो उदरमें जलतत्व होय तो पैरोंमें, अग्नितत्व होय तो जंघाओंमें और वायुतत्व होय तो हाथोंमें घात होगा अर्थात् शस्त्र लगेगा ॥ २५२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिरसि व्योमतत्वे च ज्ञातव्यो घातनिर्णयः ॥
एवं पंचविधो घातः स्वरशास्त्रे प्रकाशितः ॥२५३ ॥

यदि आकाशतत्व वहता होय तो शिरमें घावका निर्णय जानना, इस प्रकार स्वरशास्त्रमें पांच प्रकारका घाव प्रकाशित किया है ॥ २५३ ॥

युद्धकाले यदा चंद्रः स्थायी जयति निश्चितम् ॥
यदा सूर्यप्रवाहस्तु यायी विजयते तदा ॥ २५४ ॥

जब युद्धके समयमें चंद्रमाका स्वर चलता हो तो स्थायी (जिसपर चढाई की जाय) की निश्चयसे जय होगी और जो सूर्यके स्वरका प्रवाह होय तो यायी (चढनेवाले) की जय होय ॥ २५४ ॥

जयमध्ये तु संदेहे नाडीमध्यं तु लक्षयेत् ॥
सुषुम्नायां गते प्राणे समरे शत्रुसंकटम् ॥ २५५ ॥

जो जयके मध्यमें संदेह होय तो नाडीके मध्यको देखे, यदि प्राणवायु सुषुम्ना नाडीमें चलता होय तो संग्राममें शत्रुको संकट हो ॥ २५५ ॥

यस्या नाड्या भवेच्चारस्तां दिशं युधि संश्रयेत् ॥
तदासौ जयमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥ २५६॥

जिस नाडीका चार (चलना) होय युद्धके समयमें उसी दिशामें खडा होय अर्थात् चंद्रनाडीमें पूर्व अथवा उत्तरमें, सूर्यनाडीमें दक्षिण अथवा पश्चिममें इस प्रकार वह युद्ध करनेवाला जयको प्राप्त होता है इसमें कुछ विचार नहीं करना ॥ २५६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि संग्रामकाले तु वामनाडी यदा वहेत् ॥
स्थायिनो विजयं विद्याद्रिपुवश्योदयोऽपि च॥२५७॥

यदि संग्रामके समय वामनाडी वहती होय तो स्थायीका विजय जाने और शत्रुके वशमें यायीका होना समझे ॥ २५७॥

यदि संग्रामकाले तु सूर्यस्तु व्यावृतो वहेत् ॥
तदा यायिजयं विद्यात्सदेवासुरमानवे ॥ २५८ ॥

जो संग्रामके समय सूर्यका स्वर लगातार वहता होय तो उस समय देवता, राक्षस, मनुष्यके युद्धके यायिके जयको जानना ॥ २५८ ॥

रणे हरति शत्रुस्तं वामायां प्रविशेन्नरः ॥
स्थानं विषुविचारेण जयः सूर्येण धावता ॥ २५९ ॥

जो मनुष्य वामनाडीके प्रचारमें युद्धमें प्रवेश करता है उसको संग्रामके शत्रु हर लेते हैं और सुषुम्ना नाडीके वहते जो गमन करे उसको स्थान मिलता है अर्थात् युद्ध नहीं होता, सूर्यस्वरके वहते गमन करे तो जयको प्राप्त होता है ॥ २५९ ॥

युद्धद्वये कृते प्रश्ने पूर्णस्य प्रथमे जयः ॥
रिक्ते चैव द्वितीयस्तु जयी भवति नान्यथा ॥२६०॥

यदि एक समय युद्धविषयक प्रश्न दो होंय तो उस समय पूर्ण स्वर वहता होय तो प्रथमका जय और रिक्त स्वर वहता होय तो दूसरेका जय अन्यथा नहीं ॥ २६० ॥

पूर्णनाडीगतः पृष्ठे शून्यांगं च तदाग्रतः ॥
शून्यस्थाने कृतः शत्रुर्म्रियते नात्र संशयः ॥ २६१ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि पूर्ण नाडीमें गया हो तो शत्रु पीठपर आवे अर्थात् शत्रु पीठ देकर भाग जाय, शून्य नाडीका अंग होय तो शत्रु आगे आवे और शून्य स्थानमें किया हुआ शत्रु मरणको प्राप्त होता है इसमें संशय नहीं ॥ २६१ ॥

वामचारे समं नाम यस्य तस्य जयो भवेत् ॥
पृच्छको दक्षिणे भागे विजयी विषमाक्षरः॥ २६२ ॥

यदि कोई वाम भागमें बैठकर प्रश्न करे तो उसको प्रश्नके वा जिस बातको पूछे उसके समाक्षर होंय तो उसका जय और विषम अक्षरवालेका पराजय होता है । यदि दक्षिण भागमें बैठकर प्रश्न करे तो विषम अक्षरवालेका जय और सम अक्षरवालेका पराजय होय ॥ २६२ ॥

यदा पृच्छति चंद्रस्य तदा संधानमादिशेत् ॥
पृच्छेद्यदा तु सूर्यस्य तदा जानीहि विग्रहम् ॥२६३॥

यदि पूछनेके समयमें चंद्रमाका स्वर चले तो संधि (मिलाप) को कहे सूर्यके स्वरमें प्रश्न करे तो उस समय विग्रह (लडाई) को जाने ॥ २६३ ॥

पार्थिवे च समं युद्धं सिद्धिर्भवति वारुणे ॥
युद्धे हि तेजसो भंगो मृत्युर्वायौ नभस्यपि ॥२६४॥

यदि पृथ्वीतत्वमें युद्धका आरंभ होय तो युद्धमें बराबरी, जलके तत्वमें जयकी प्राप्ति, तेजके तत्वमें भंग (नाश), वायु और आकाश तत्वमें मृत्यु होता है ॥ २६४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निमित्तकप्रमादाद्वा यदा न ज्ञायतेऽनिलः ॥
पृच्छाकाले तदा कुर्यादिदं यत्नेन बुद्धिमान् ॥२६५॥

यदि किसी निमित्तसे अथवा प्रमादसे प्रश्नके समयमें दक्षिणा या उत्तर स्वरका ज्ञान न होय तब बुद्धिमान् मनुष्य यत्नसे यह करे कि ॥ २६५ ॥

निश्चलां धारणां कृत्वा पुष्पं हस्तान्निपातयेत् ॥
पूर्णांगे पुष्पपतनं शून्यं वा तत्परं भवेत् ॥ २६६ ॥

निश्चल धारणा करके अपने हाथसे पुष्पको पृथ्वीपर गेरे जो अपने अग्रभागमें पुष्प पडे तो पूर्ण फल और दूर पडे तो शून्य फल जानना ॥ २६६ ॥

तिष्ठन्नुपविशन्नपि प्राणमाकर्षयन्निजम् ॥
मनोभंगमकुर्वाणः सर्वकार्येषु जीवति ॥ २६७ ॥

जो मनुष्य खडा होता और बैठता हुआ अपनी प्राणवायुको निश्चल मनसे शरीरके भीतर आकर्षण (खींचना) करता है वह सब कार्योंको जीवता है अर्थात् सब कार्य सिद्ध होते हैं ॥ २६७ ॥

न कालो विविधं घोरं न शस्त्रं न च पन्नगाः ॥
न शत्रुव्याधिचोराद्याः शून्यस्था नाशितुं क्षमाः २६८

काल और अनेक प्रकारके भयानक शस्त्र, सर्प, शत्रु, व्याधि और चौर आदि शून्य स्थानमें टिके हुए ये सब मनुष्यको नाश करनेको समर्थ नहीं होते ॥ २६८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवेन स्थापयेद्वायुं जीवेनारंभयेत्पुनः ॥
जीवेन क्रीडते नित्यं द्यूते जयति सर्वथा ॥ २६९ ॥

जीवस्वरसे वायुको स्थिर करे, फिर जीवसेही वायुका आरंभ करे और जीवसेही द्यूतक्रीडाका आरंभ करे तो द्यूतमें सर्वथा जय होती है ॥ २६९ ॥

स्वरज्ञानिबलादग्रे निष्फलं कोटिधा भवेत् ॥
इह लोके परत्रापि स्वरज्ञानी बली सदा ॥ २७० ॥

स्वरज्ञानीके बलके आगे कोटि प्रकारकेभी बल निष्फल होते हैं क्योंकि स्वरका ज्ञानी इस लोकमें और परलोकमें सदैव बलवान् होता है ॥ २७० ॥

दशशतायुतं लक्षं देशाधिपबलं क्वचित् ॥
शतक्रतुसुरेंद्राणां बलं कोटिगुणं भवेत् ॥ २७१ ॥

किसी मनुष्यको दश, किसीको शत, किसीको दश सहस्र, किसीको लक्ष, किसीको देशके राज्यका बल होता है। इन्द्र और ब्रह्मा आदि देवताओंको उनसे कोटिगुना बल होता है उसी प्रकार स्वरका बल सब बलोंसे कोटिगुणा है ॥ २७१ ॥

देव्युवाच ।

परस्परं मनुष्याणां युद्धे प्रोक्तो जयस्त्वया ॥
यमयुद्धे समुत्पन्ने मनुष्याणां कथं जयः ॥ २७२ ॥

पार्वती बोली कि, मनुष्योंके परस्पर युद्धमें जयकी प्राप्ति आपने कही, जब यमराजके संग युद्ध होय तब मनुष्यका किस प्रकार जय होवे ॥ २७२ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ईश्वर उवाच ।

ध्यायेद्देवं स्थिरो जीवं जुहुयाज्जीवसंगमे ॥
इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य महालाभो जयस्तथा ॥ २७३ ॥

महादेव बोले कि, हे पार्वति ! जो मनुष्य स्थिर होकर देवताओंका ध्यान करे और जीव संगम (कुम्भक) प्राणवायुमें जीवका होम करे उस मनुष्यके इष्टकी सिद्धि, महालाभ और जय प्राप्त होगा ॥ २७३ ॥

निराकारात्समुत्पन्नं साकारं सकलं जगत् ॥
तत्साकारं निराकारं ज्ञाने भवति तत्क्षणात् ॥ २७४ ॥

निराकार परमेश्वरसे आकारवाला सब जगत् उत्पन्न हुआ है निराकार परमेश्वरके ज्ञानसे वह जगत् साकार (आकारवाला) उसी क्षणमें हो जाता है ॥ २७४ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

नरयुद्धं यमयुद्धं त्वया प्रोक्तं महेश्वर ॥
इदानीं देवदेवानां वशीकरणकं वद ॥ २७५ ॥

पार्वती बोली कि, हे महेश्वर ! मनुष्य और यमराजका युद्ध आपने वर्णन किया अब देवताओंके देवोंका वशमें करना कहो ॥ २७५ ॥

ईश्वर उवाच ।

चंद्रं सूर्येण चाकृष्य स्थापयेज्जीवमंडले ॥
आजन्मवशगा रामा कथितेयं तपोधनैः ॥ २७६ ॥

महादेव बोले कि, स्त्रीके चंद्रस्वरको अपने सूर्यस्वरसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकर्षण करके अपने जीवस्वरको मण्डलमें टिकावे तो स्त्री जन्मभर अपने वशमें होती है यह तपस्वियोंने कहा है। यह क्रिया अपनी विवाही स्त्रीमेंही हो सकती है ॥ २७६ ॥

जीवेन गृह्यते जीवो जीवो जीवस्य दीयते ॥
जीवस्थाने गतो जीवो बालाजीवांतकारकः ॥ २७७॥

पुरुष अपने जीवस्वरमें स्त्रीके जीवस्वरको ग्रहण करे और स्त्रीके जीवस्वरमें अपना जीवस्वर दे, इस प्रकार जीवके स्थानमें गया हुआ जीव जिसका ऐसा पुरुष जन्मभरतक स्त्रीके वशमें रहता है ॥ २७७ ॥

रात्र्यंतयामवेलायां प्रसुप्ते कामिनीजने ॥
ब्रह्मजीवं पिबेद्यस्तु बालाप्राणहरो नरः ॥ २७८ ॥

रात्रिके पिछले प्रहरके समय जो मनुष्य ब्रह्म जीव (सुषुम्ना स्वर) को पीता है वह मनुष्य स्त्रियोंके प्राणोंको वशमें करता है ॥ २७८ ॥

अष्टाक्षरं जपित्वा तु तस्मिन्काले गते सति ॥
तत्क्षणं दीयते चंद्रो मोहमायाति कामिनी ॥ २७९॥

उस कालके व्यतीत होनेपर अष्टाक्षर मंत्रको जपकर जो पुरुष अपना चंद्रस्वर स्त्रीको देता है तो वह कामिनी उसी क्षणमें मोहको प्राप्त होती है ॥ २७९ ॥

शयने वा प्रसंगे वा युवत्यालिंगनेऽपि वा ॥
यः सूर्येण पिबेच्चंद्रं स भवेन्मकरध्वजः ॥ २८० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शयनके समय वा स्त्रीके संगमें अथवा स्पर्शके समय जो मनुष्य अपने सूर्यस्वरसे स्त्रीके चंद्रस्वरको पीता है वह मनुष्य कामदेवके समान मोह करनेवाला होता है॥ २८० ॥

शिव आलिंग्यते शक्त्या प्रसंगे दक्षिणेऽपि वा ॥
तत्क्षणाद्दापयेद्यस्तु मोहयेत्कामिनीशतम् ॥२८१॥

यदि शिवस्वर (सूर्य) शक्तिस्वर (चंद्र) से स्त्री-संगके समय मिल जाय अथवा पुरुष अपना चंद्रस्वर स्त्रीको दे तो वह पुरुष सौ कामिनियोंको मोह सकता है॥ २८१ ॥

सप्त नव त्रयः पंच वारान् संगस्तु सूर्यभे ॥
चंद्रे द्वितुर्यषट् कृत्वा वश्या भवति कामिनी॥२८२॥

स्त्रीके चंद्रस्वरको अपने सूर्यस्वरमें देनेके अनंतर सात (७) नव (९) तीन (३) वा पांच (५) वार संग हो जाय अथवा स्त्रीके चंद्रस्वरमें अपना सूर्यस्वर कर दो (२) चार (४) वा छः (६) वार मिल जाय तो वह कामिनी वशमें होती है॥ २८२ ॥

सूर्यचंद्रौ समाकृष्य सर्पाक्रान्त्याधरोष्ठयोः ॥
महापद्मे मुखं स्पृष्ट्वा वारं वारमिदं चरेत् ॥ २८३ ॥

अपने सूर्य और चंद्रस्वरको सर्पकी गतिसे खींचकर अधरोष्ठोंपर स्त्रीके मुखसे अपना मुखस्पर्श करके वारंवार पूर्वोक्त प्रकारसे चंद्र और सूर्यका मेल करे॥ २८३ ॥

आप्राणमिति पद्मस्य यावन्निद्रावशं गता ॥
पश्चाज्जागर्ति वेलायां चोष्येते गलचक्षुषी ॥ २८४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जबतक स्त्री निद्राके वशमें रहे तबतक पूर्वोक्त प्रकारसे स्त्रीके मुखपद्मका पान करे, पीछे जागनेके समय गला व नेत्र इनका चुंबन करे ॥ २८४ ॥

अनेन विधिना कामी वशयेत्सर्वकामिनीः ॥
इदं न वाच्यमन्यस्मिन्नित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥२८५॥

इस विधिसे कामी पुरुष सब कामिनियोंको वशमें करता है परंतु मेरी यह सच्ची आज्ञा है कि यह वशीकरण किसी अन्य पुरुषको अर्थात् लंपटको न कहे ॥ २८५ ॥

इति वशीकरणम् ।

अथ गर्भप्रकरणम् ।

ऋतुकालभवा नारी पंचमेऽह्नि यदा भवेत् ॥
सूर्याचंद्रमसोर्योगे सेवनात्पुत्रसंभवः ॥ २८६ ॥

ऋतुस्नानके अनंतर जब स्त्रीको पांचवां दिन होय उस समय पुरुषका सूर्यस्वर स्त्रीका चंद्रस्वर चलता होय तो उस समय स्त्रीसे संग करनेसे पुत्रका जन्म होता है ॥ २८६ ॥

शंखवल्ली गवां दुग्धे पृथ्व्यापो वहते यदा ॥
भर्तुरेव वदेद्वाक्यं गर्भं देहि त्रिभिर्वचः ॥ २८७ ॥

जिस समय पृथ्वी और जलतत्व बहते होयँ उस समय स्त्रीको गौके दूधमें शंखवल्लीको खिलावे फिर स्त्री अपने भर्तासे तीन वार भोगकी प्रार्थना करे ॥ २८७ ॥

ऋतुस्नाता पिबेन्नारी ऋतुदानं तु योजयेत् ॥
रूपलावण्यसंपन्नो नरसिंहः प्रसूयते ॥ २८८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब स्त्री ऋतुस्नानके अनंतर उक्त औषधको पी ले तब पुरुष ऋतुदान दे अर्थात् भोग करे तो रूप और पराक्रमी सुंदर नरोंमें सिंह पैदा होता है ॥ २८८ ॥

सुषुम्ना सूर्यवाहेन ऋतुदानं तु योजयेत् ॥
अंगहीनः पुमान्यस्तु जायते त्रासविग्रहः ॥ २८९ ॥

जो मनुष्य सूर्यस्वरके प्रवाहके संग सुषुम्नास्वरके बहनेके समय ऋतुदान देता है उसके अंगहीन और कुरूप पुत्र पैदा होता है ॥ २८९ ॥

विषमांके दिवारात्रौ विषमांके दिनाधिपः ॥
चंद्रनेत्राग्नितत्वेषु वंध्या पुत्रमवाप्नुयात् ॥ २९० ॥

ऋतुके अनंतर विषम दिनोंमें पुरुषका सूर्यस्वर दिन वा रात्रिमें चले अर्थात् स्त्रीका चंद्रस्वर चले और पृथ्वी, जल, अग्नि इन तत्वोंमें गर्भाधान होय तो वंध्याभी पुत्रको प्राप्त होती है ॥ २९० ॥

ऋत्वारंभे रविः पुंसां स्त्रीणां चैव सुधाकरः ॥
उभयोः संगमे प्राप्ते वंध्या पुत्रमवाप्नुयात् ॥ २९१ ॥

यदि ऋतुके आरंभमें पुरुषका सूर्यस्वर और स्त्रीका चंद्रस्वर चले और दोनोंका संगम हो जाय तो वंध्याभी पुत्रको प्राप्त हो जाय ॥ २९१ ॥

ऋत्वारंभे रविः पुंसां शुक्रांते च सुधाकरः ॥
अनेन क्रमयोगेन नादत्ते दैवदारुकम् ॥ २९२ ॥

यदि भोगके आरंभमें पुरुषका सूर्यस्वर चले और वीर्यपातके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनंतर चंद्रस्वर वहने लगे तो इस क्रमयोगसे स्त्री गर्भ धारण नहीं करती ॥ २९२ ॥

चंद्रनाडी यदा प्रश्ने गर्भे कन्या तदा भवेत् ॥
सूर्यो भवेत्तदा पुत्रो द्वयोर्गर्भो विहन्यते ॥ २९३ ॥

यदि गर्भवतीके प्रश्नके समयमें चंद्रमाकी नाडी चले तो गर्भमें कन्या होती है और सूर्यस्वर चले तो पुत्र और दोनों स्वर चलें तो गर्भ नष्ट हो जाता है ॥ २९३ ॥

पृथ्व्यां पुत्री जले पुत्रः कन्यका तु प्रभंजने ॥
तेजसि गर्भपातः स्यान्नभस्यापि नपुंसकः ॥२९४ ॥

प्रश्नके समयमें पृथ्वीतत्व होय तो कन्या, जलतत्व होय तो पुत्र, वायुतत्व होय तो कन्या, तेजतत्व होय तो गर्भका पात और आकाशतत्व होय तो नपुंसक होता है ॥ २९४ ॥

चंद्रे स्त्री पुरुषः सूर्ये मध्यमार्गे नपुंसकः ॥
गर्भप्रश्ने यदा दूतः पूर्णे पुत्रः प्रजायते ॥ २९५ ॥

गर्भके प्रश्नसमय चंद्रस्वर होय तो कन्या, सूर्यस्वर होय तो पुत्र, सुषुम्नाका स्वर होय तो नपुंसक होता है । यदि पूछने-वाले दूतके पूर्ण अंग होयँ तो पुत्र पैदा होता है ॥ २९५ ॥

शून्ये शून्यं युगे युग्मं गर्भपातश्च संक्रमे ॥
तत्ववित्स विजानीयात्कथितं तव सुंदरि ॥ २९६ ॥

हे सुंदरि ! पूछनेवालेके अंग शून्य होयँ तो शून्य, दो (२) स्वर चलते होयँ तो युग्म (दो), यदि स्वरोंका संक्रम या सुषुम्ना होय तो गर्भका पात तत्वोंके वेत्ता जानें ॥ २९६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गर्भाधानं मारुते स्याच्च दुःखी दिक्षु ख्यातो वारुणे सौख्ययुक्तः ॥ गर्भस्रावः स्वल्पजीवश्च वह्नौ भोगी भव्यः पार्थिवेनार्थयुक्तः ॥ २९७ ॥

वायुतत्वमें गर्भाधान होय तो दुःखवाला, जलतत्वमें गर्भाधान होय तो दिशाओंमें विख्यात सुखी, अग्नितत्वमें होय तो गर्भका पात अथवा अल्पजीवी और पृथ्वीतत्वमें होय तो भोगी सुंदर, धनवान् पुत्र पैदा होता है ॥ २९७ ॥

धनवान् सौख्ययुक्तश्च भोगवानर्थसंस्थितिः ॥
स्यान्नित्यं वारुणे तत्वे व्योम्नि गर्भो विनश्यति ॥ २९८ ॥

जलतत्वमें गर्भाधान होय तो धनवान्, सुखी, भोगवान् जिसके पास नित्य धन रहे ऐसा पुत्र पैदा होता है । आकाशतत्वमें गर्भाधान होय तो गर्भ नष्ट हो जाता है ॥ २९८ ॥

माहेंद्रे सुसुतोत्पत्तिर्वारुणे दुहिता भवेत् ॥
शेषेषु गर्भहानिः स्याज्जातमात्रस्य वा मृतिः २९९ ॥

पृथ्वीतत्वमें गर्भाधान होय तो पुत्रकी और जलतत्वमें रहे तो कन्याकी उत्पत्ति होती है और शेष तत्वमें रहे तो गर्भकी हानि वा पैदा होतेहीका मरण होता है ॥ २९९ ॥

रविमध्यगतश्चंद्रश्चंद्रमध्यगतो रविः ॥
ज्ञातव्यं गुरुतः शीघ्रं न वेदे शास्त्रकोटिभिः ॥ ३०० ॥

सूर्यस्वरके मध्यमें चंद्रस्वरकी और चंद्रस्वरके मध्यमें सूर्यस्वरकी गति गुरुसे शीघ्र जाने यह बात वेद और कोटि शास्त्रोंसे नहीं आती ॥ ३०० ॥

इति गर्भप्रकरणम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ संवत्सरफलम्।

चैत्रशुक्लप्रतिपदि प्रातस्तत्वविभेदतः ॥
पश्येद्विचक्षणो योगी दक्षिणे चोत्तरायणे ॥ ३०१ ॥

चैत्रके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाको प्रातःकालके समय तत्वाक विभेदसे विचक्षण (पंडित) योगी दक्षिणायन और उत्तरायण देखे अर्थात् उस दिनके तत्वोंके बहनेसे वर्षभरके फलको देखे ॥ ३०१ ॥

चंद्रोदयस्य वेलायां वहमानोऽथ तत्वतः ॥
पृथिव्यापस्तथा वायुः सुभिक्षं सर्वसस्यजम् ॥ ३०२ ॥

चंद्रस्वरके उदयके समय यदि पृथिवी, जल वा वायुतत्व चले तो सब खेतियोंका सुभिक्ष होता है ॥ ३०२ ॥

तेजो व्योम्नोर्भयं घोरं दुर्भिक्षं कालतत्वतः ॥
एवं तत्वफलं ज्ञेयं वर्षे मासे दिनेष्वपि ॥ ३०३ ॥

यदि चंद्रस्वरमें तेज और आकाशतत्व चलते होयँ तो घोर भय और दुर्भिक्ष होता है। इसी प्रकार समयके तत्वानुसार वर्ष मास और दिनोंमेंभी संपूर्ण तत्वोंका फल जानना ॥ ३०३ ॥

मध्यमा भवति क्रूरा दुष्टा सर्वेषु कर्मसु ॥
देशभंगमहारोगक्लेशकष्टादिदुःखदा ॥ ३०४ ॥

मध्यमा (सुषुम्ना) नाडी क्रूर और सब कर्मोंमें दुष्ट (बुरी), देशका भंग, महारोग, क्लेश, कष्ट आदि अत्यंत दुःखोंको देती है ॥ ३०४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेषसंक्रांतिवेलायां स्वरभेदं विचारयेत् ॥
संवत्सरफलं ब्रूयाल्लोकानां तत्वचिंतकः ॥ ३०५ ॥

यदि मेषकी संक्रांतिके समय स्वरके भेदको विचारे तो तत्वका चिंतक मनुष्य लोकोंको संवत्सरका फल कह सकता है ॥ ३०५ ॥

पृथिव्यादिकतत्वेन दिनमासाब्दजं फलम् ॥
शोभनं च यथा दुष्टं व्योममारुतवह्निभिः ॥ ३०६ ॥

मेषसंक्रांतिके समय पृथिवी आदि तत्वोंसे दिन, मास और वर्षका फल शोभन जाने और आकाश, पवन और अग्नितत्वसे दुष्ट फल जाने ॥ ३०६ ॥

सुभिक्षं राष्ट्रवृद्धिः स्याद्बहुसस्या वसुंधरा ॥
बहुवृष्टिस्तथा सौख्यं पृथ्वीतत्वं वहेद्यदि ॥ ३०७ ॥

यदि मेषसंक्रांतिके दिन पृथ्वीतत्व चले तो सुभिक्ष, देशकी वृद्धि, पृथ्वीमें बहुत अन्न, बहुत वृष्टि और सुख होताहै ॥ ३०७ ॥

अतिवृष्टिः सुभिक्षं स्यादारोग्यं सौख्यमेव च ॥
बहुसस्या तथा पृथ्वी आप्तत्वं वै वहेद्यदि ॥ ३०८ ॥

यदि जलतत्व उस दिन बहता होय तो अतिवृष्टि, सुभिक्ष, आरोग्य और सुख और पृथिवीमें बहुत खेती होतीहै॥ ३०८॥

दुर्भिक्षं राष्ट्रभंगः स्यादुत्पत्तिश्च विनश्यति ॥
अल्पादल्पतरा वृष्टिरग्नितत्वं वहेद्यदि ॥ ३०९ ॥

यदि अग्नितत्व चलता होय तो दुर्भिक्ष, देशका भंग, उत्पत्तिका नाश और बहुत स्वल्प वृष्टि होती है ॥ ३०९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्पातोपद्रवा भीतिरल्पा वृद्धिः स्युरीतयः ॥
मेषसंक्रांतिवेलायां व्योमतत्वं वहेद्यदि ॥ ३१० ॥

यदि मेषसंक्रांतिके समय वायुतत्व चलता होय तो उत्पात, उपद्रव, भीति, अल्पवृष्टि, ईतिं[1] (मूसे लगना आदि छः) होती हैं ॥ ३१० ॥

मेषसंक्रांतिवेलायां व्योमतत्वं वहेद्यदि ॥
तत्रापि शून्यता ज्ञेया सस्यादीनां सुखस्य च ॥३११॥

यदि मेषसंक्रांतिके समय आकाशतत्व वहता होय तो सस्य आदि और सुखकी शून्यता जाननी ॥ ३११ ॥

पूर्णप्रवेशने श्वासे सस्यं तत्वेन सिध्यति ॥
सूर्यचंद्रेऽन्यथाभूते संग्रहः सर्वसिद्धिदः ॥ ३१२ ॥

यदि श्वासका पूर्ण प्रवेश हो जाय तो तत्वसे धान्यकी सिद्धि होती है और यदि तत्वोंके उदयके समय सूर्य व चंद्रस्वर विपरीत हो जायं तो और चंद्रके योगमें सूर्य और सूर्यके योगमें चंद्र हो तो अन्नका संग्रह सिद्धि (लाभ) को देता है॥३१२॥

विषमे वह्नितत्वं स्याज्ज्ञायते केवलं नभः ॥
तत्कुर्याद्वस्तुसंग्राहो द्विमासे च महर्घता ॥ ३१३ ॥

यदि विषम (दक्षिण) स्वरमें अग्नितत्व हो अथवा केवल आकाशतत्व हो तो उस समय वस्तुओंका संग्रह करे तो दो मासमें महर्घता (महंगा) होगा ॥ ३१३ ॥

---

१ अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषिका शलभाः शुकाः । अत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रवौ संक्रमते नाडी चंद्रमंते प्रसर्पिता ॥
खानिले वह्नियोगेन रौरवं जगतीतले ॥ ३१४ ॥

यदि रात्रिके समय सूर्यकी नाडी बहती हो और प्रातःकालके समय चन्द्रमाकी नाडी बहने लगे और उस समय आकाश, पवन, अग्नितत्व इनका योग होय तो पृथ्वीके तलपर रौरव (बडे २ अनर्थ) होते हैं ॥ ३१४ ॥

इति संवत्सरप्रकरणम् ।

अथ रोगप्रकरणम् ।

महीतत्वे स्वरोगश्च जले च जलमातृतः ॥
तेजसि खेटवाटीस्थशाकिनीपितृदोषतः ॥ ३१५ ॥

यदि प्रश्नके समय पृथ्वीतत्व बहता होय तो स्वप्रारब्धका रोग, जलतत्व चलता होय तो जलोंकी मातृओंका, तेजतत्व बहता होय तो खेटवाटीमें रहनेवाली शाकिनी वा पितृदोष (पीडा) से रोगका होना समझना ॥ ३१५ ॥

आदौ शून्यगतौ दूतः पश्चात्पूर्णे विशेद्यदि ॥
मूर्च्छितोऽपि ध्रुवं जीवेद्यदर्थं प्रति पृच्छति॥३१६॥

यदि पूछनेवाला दूत पहिले शून्य अंगकी तरफ आया हो और पश्चात् (पीछे) पूर्ण अंगकी तरफ बैठ जाय तो मूर्छित भी वह रोगी निश्चयसे जी जायगा ।जिसके लिये वह पूछता था ॥ ३१६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यस्मिन्नंगे स्थितो जीवस्तत्रस्थः परिपृच्छति ॥
तदा जीवति जीवोऽसौ यदि रोगैरुपद्रुतः ॥ ३१७ ॥

यदि जिस अंगमें जीव स्थित हो उसी अंगकी तरफ बैठा हुआ प्रश्न करे तो रोगोंसे पीडितभी वह जीव अवश्य जीवेगा ॥ ३१७ ॥

दक्षिणेन यदा वायुर्दूतो रौद्राक्षरो वदेत् ॥
तदा जीवति जीवोऽसौ चंद्रे समफलं भवेत् ॥ ३१८ ॥

यदि वायु दक्षिण नाडीकी बहती हो और दूतके मुखसे भयानक वचन निकले तो वह जीव जीवेगा और चंद्रस्वर होय तो समान फल होता है ॥ ३१८ ॥

जीवाकारं च वा धृत्वा जीवाकारं विलोक्य च ॥
जीवस्थो जीवितप्रश्ने तस्य स्याज्जीवितं फलम् ॥ ३१९ ॥

जीवाकारको धारकर और देखकर जीवमें स्थित हुआ दूत जीनेका प्रश्न करे तो उसको जीवनका फल होता है ॥ ३१९ ॥

वामचारे तथा दक्षप्रवेशे यत्र वाहने ॥
तत्रस्थः पृच्छते दूतस्तस्य सिद्धिर्न संशयः ॥ ३२० ॥

वामनाडी (इडा) अथवा दक्षिणनाडी (पिंगला) इन दोनोंके चलने वा प्रवेश करनेके समय जो दूत प्रश्न करे तो उसकी सिद्धि होती है इसमें संशय नहीं ॥ ३२० ॥

प्रश्ने चाधः स्थितो जीवो नूनं जीवो हि जीवति ॥
ऊर्ध्वंचारस्थितो जीवो जीवो याति यमालयम् ॥ ३२१ ॥

यदि प्रश्नके समय दूत अधोभागमें स्थित होय तो वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोगी निश्चयसे जीवे । यदि जीव ऊर्ध्वभागमें स्थित होय तो जीव यमालयमें जायगा ॥ ३२१ ॥

विपरीताक्षरप्रश्ने रिक्तायां पृच्छको यदि ॥
विपर्ययं च विज्ञेयं विषमस्योदये सति ॥ ३२२ ॥

यदि विषमनाडी (सुषुम्ना) का उदय हो और प्रश्नका कर्ता रिक्त नाडीमें ऐसा प्रश्न करे जिसके अक्षर विषम (१, ३, ५ आदि) हों तो विपरीत फल जानना ॥ ३२२ ॥

चंद्रस्थाने स्थितो जीवः सूर्य स्थाने तु पृच्छकः ॥
तदा प्राणवियुक्तोऽसौ यदि वैद्यशतैर्वृतः ॥ ३२३ ॥

यदि अपनी जीव (श्वासवायु) चंद्रमाके चारमें स्थित हो और प्रश्नकर्त्ता सूर्यके चारमें स्थित होय तो यह रोगी चाहे सौ वैद्योंसे युक्त हो तोभी मर जायगा ॥ ३२३ ॥

पिंगलायां स्थितो जीवो वामे दूतस्तु पृच्छति ॥
तदाऽपि म्रियते रोगी यदि त्राता महेश्वरः ॥ ३२४ ॥

यदि जीव पिंगलामें स्थित हो और दूत वाम भागमें स्थित होकर पूछे तो उस समयभी रोगी मर जायगा चाहे महादेवभी रक्षा क्यों न करें ॥ ३२४ ॥

एकस्य भूतस्य विपर्ययेण रोगाभिभूतिर्भवतीह
पुंसाम् ॥ तयोर्द्वयोर्बंधुसुहृद्विपत्तिः पक्षद्वये
व्यत्ययतो मृतिः स्यात् ॥ ३२५ ॥

एक भूत (तत्व) के विपरीत होनेसेभी पुरुषोंको रोग तिरस्कार कर देते हैं और दो तत्वोंके विपरीत होनेसे बंधु और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मित्रोंसे विपत्ति होती है। यदि दो पक्ष (१ मास) तक व्यत्यय चला जाय तो मृत्यु होता है॥ ३२५ ॥

इति रोगप्रकरणम्।

अथ कालप्रकरणम्।

मासादौ चैव पक्षादौ वत्सरादौ यथाक्रमम् ॥
क्षयकालं परीक्षेत वायुचारवशात्सुधीः ॥ ३२६ ॥

मास, पक्ष और वर्ष इन तीनोंको क्रमसे आदिमें विद्वान् मनुष्य वायुके प्रचारवशसे क्षय (मरण) के समयकी परीक्षा करे॥ ३२६ ॥

पंचभूतात्मकं दीपं शिवस्नेहेन सिंचितम् ॥
रक्षयेत्सूर्यवातेन प्राणी जीवः स्थिरो भवेत् ॥३२७॥

यह पंचभूतात्मक दीप (देह) की शिवरूप स्नेह (तेल) से सींचकर सूर्यरूप पवनसे जो प्राणी रक्षा करता है उसका जीव स्थिर होता है॥ ३२७ ॥

मारुतं बंधायित्वा तु सूर्यं बंधयते यदि ॥
अभ्यासाज्जीवते जीवः सूर्यकालेऽपि वांचिते ॥३२८॥

जो मनुष्य प्राणवायुको बांधकर दिनभर सूर्यस्वरका बंधन करता है इस प्रकार अभ्यासके बलसे सूर्य कालका वंचन करके वह जीव जी सकता है॥ ३२८ ॥

गगनात्स्रवते चंद्रः कायपद्मानि सिंचयेत् ॥
कर्मयोगसदाभ्यासैरमरः शशिसंश्रयात् ॥ ३२९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकाशमें गमन करनेसे चंद्रमाकी किरण नीचे गिरकर देहरूपी कमलोंको सींचती है इस प्रकार कर्मके योगसे योगी चंद्रमाका आश्रय लेनेसे अभ्यासके द्वारा अमर हो जाता है ॥ ३२९ ॥

शशांकं वारयेद्रात्रौ दिवा वार्यो दिवाकरः ॥
इत्यभ्यासरतो नित्यं स योगी नात्र संशयः ॥३३०॥

जो रात्रिमें चंद्रस्वरका और दिनमें सूर्यस्वरका निवारण करता है इस प्रकार अभ्यासमें तत्पर वह योगीही योगी है इसमें संदेह नहीं है ॥ ३३० ॥

अहोरात्रे यदैकत्र वहते यस्य मारुतः ॥
तदा तस्य भवेन्मृत्युः संपूर्णे वत्सरत्रये ॥ ३३१ ॥

जिस मनुष्यका प्राणवायु (श्वास) अहोरात्रभर एक स्थानमेंही वहता रहे तब उस मनुष्यकी मृत्यु तीन वर्षमें हो जायगी ॥ ३३१ ॥

अहोरात्रद्वयं यस्य पिंगलायां सदागतिः ॥
तस्य वर्षद्वयं प्रोक्तं जीवितं तत्ववेदिभिः ॥ ३३२ ॥

जिस मनुष्यके श्वासकी गति दो अहोरात्र पिंगलामें रहे तत्त्वके ज्ञाताओंने उस मनुष्यका जीवन दो वर्षका कहा है ॥ ३३२ ॥

त्रिरात्रे वहते यस्य वायुरेकपुटे स्थितः ॥
तदा संवत्सरायुस्तं प्रवदंति मनीषिणः ॥ ३३३ ॥

जिस मनुष्यकी प्राणवायु तीन रात्रितक एकही नासिकाके पुटमें स्थित होकर चले तो विद्वान् मनुष्य उसकी अवस्था एक वर्षकी कहते हैं ॥ ३३३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात्रौ चंद्रो दिवा सूर्यो वहेद्यस्य निरंतरम् ॥
जानीयात्तस्य वै मृत्युः षण्मासाभ्यंतरे भवेत्॥३३४॥

जिस मनुष्यका रात्रिमें चंद्रस्वर और दिनमें सूर्यस्वर निरंतर वहे उस मनुष्यकी छः महीनेके भीतर मृत्यु होती है॥३३४॥

लक्ष्यं लक्षितलक्षणेन सलिले भानुर्यदा दृश्यते।
क्षीणो दक्षिणपश्चिमोत्तरपुरः षट्त्रिद्विमासैकतः॥
मध्यं छिद्रमिदं भवेद्दशदिनं धूमाकुलं तद्दिने।
सर्वज्ञैरपि भाषितं मुनिवरैरायुः प्रमाणं स्फुटम्॥३३५॥

जिस मनुष्यको जलके विषे सूर्यका प्रतिबिंब क्षीण (कटा हुआ) क्रमसे दक्षिण, पश्चिम, उत्तर और पूर्वमें दीखे वह छः६, तीन ३, दो २, एक १, मास जीवेगा अर्थात् दक्षिणमें जिसको कटा देखे उसकी छः ६, पश्चिममें तीन ३, उत्तरमें २, और पूर्वमें १, मासकी अवस्था समझनी। यदि प्रतिबिंबके मध्यमें छिद्र दीखे तो दश दिनकी अवस्था जाननी, यदि संपूर्ण प्रतिबिंबमें धूमसा प्रतीति होय तो उसी दिन मृत्यु जाननी, यह सर्वज्ञ मुनिवरोंने अवस्थाका प्रकट प्रमाण कहा है ॥ ३३५ ॥

दूतः कृष्णकषयाकृष्णवसनो दंतक्षतो मुंडितः।
तैलाभ्यक्तशरीररज्जुककरो दीनश्च पूर्णोत्तरः॥
भस्मांगारकपालपाशमुशलीसूर्यास्तमायाति यः।
कालीशून्यपदस्थितो गदयुतःकालानलस्याहृतः ३३६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि प्रश्न करनेवाला दूत काले भगुवे वस्त्र धारण कर अथवा दूतके दांतोंमें घाव होय या मुंडित होय, तैलाभ्यंग किये होय, हाथमें रस्सी लिये होय, दीन होय, पूर्वोत्तर अर्थात् उत्तर देनेमें समर्थ और भस्म, अंगार, कपाल, मुसल ये जिसके हाथमें होयँ, जो सूर्यास्तके समय आवे और जिसके पैर शून्य होयँ इतने प्रकारका दूत पूछनेको आवे तो रोगी कालको प्राप्त होगा ऐसा जाने ॥ ३६६ ॥

अकस्माच्चित्तविकृतिरकस्मात्पुरुषोत्तमः ॥
अकस्मादिंद्रियोत्पातः सन्निपाताग्रलक्षणम् ॥३६७॥

जिस रोगीके चित्तमें अकस्मात् विकार हो जाय और अकस्मात् उत्तम हो जाय और अकस्मात् इंद्रियोंमें उत्पात हो जाय ये सन्निपातके लक्षण जानने ॥ ३३७ ॥

शरीरं शीतलं यस्य प्रकृतिर्विकृता भवेत् ॥
तदरिष्टं समासेन व्यासतस्तु निबोध मे ॥ ३३८ ॥

जिसका शरीर शीतल हो, प्रकृतिमें विकार होय वह संक्षेपसे अरिष्ट जानना और मेरे सकाशसे विस्तारसे श्रवण कर ॥३३८॥

दुष्टशब्देषु रमते शुद्धशब्देषु चात्याति ॥
पश्चात्तापो भवेद्यस्य तस्य मृत्युर्न संशयः ॥३३९॥

जो मनुष्य बुरे २ शब्दोंको कहे और जो शुद्ध शब्दोंको कहे और पछिसे पश्चात्ताप करे उसकी मृत्यु होगी इसमें संशय नहीं ॥ ३३९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुंकारः शीतलो यस्य फूत्कारो वह्निसन्निभः ॥
महावैद्यो भवेत्तस्य तस्य मृत्युर्भवेद्ध्रुवम् ॥३४०॥

जिसका हुंकार शीतल होय और फूत्कार अग्निके समान होय उसकी चाहे महान् वैद्य रक्षा करे तोभी निश्चयसे मृत्यु होगी ३४०

जिह्वां विष्णुपदं ध्रुवं सुरपदं संमातृकामण्डल-।
मेतान्येवमरुंधतीममृतगुं शुक्रं ध्रुवं वा क्षणम् ॥
एतेष्वेकमपि स्फुटं न पुरुषः पश्येत्पुरः प्रेषितः ।
सोऽवश्यं विशतीह कालवदनं संवत्सरादूर्ध्वतः ३४१॥

जो मनुष्य जीभ (जिह्वा), आकाश, ध्रुव, देवमार्ग, मातृकाओंका मंडल, अंरुधती, चंद्रमा, शुक्र, अगस्ति इनमेंसे एककोभी कहनेसे न देखे वह रोगी अवश्य वर्ष दिनके अनंतर कालके मुखमें जायगा ॥ ३४१ ॥

अरश्मिबिंबं सूर्यस्य वह्नेः शीतांशुमालिनः ॥
दृष्ट्वैकादशमासायुर्नरश्चोर्ध्वं न जीवति ॥ ३४२ ॥

जिस मनुष्यको सूर्य चंद्रमाके प्रतिविम्ब और अग्नि इनकी किरण प्रतीत न हो उस मनुष्यकी अवस्था ग्यारह मासकी जाननी ॥ ३४२ ॥

वाप्यां पुरीषमूत्राणि सुवर्णं रजतं तथा ॥
प्रत्यक्षमथवा स्वप्ने दशमासान्न जीवति ॥ ३४३ ॥

जिस मनुष्यको सुपनेमें वा जागृत अवस्थामें बावडीमें मल, मूत्र, सुवर्ण, चांदी दीखे वह दश मासमे परे नहीं जीवेगा ॥३४३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्वचित्पश्यति यो दीपं सुवर्णं च कषान्वितम् ॥
विरूपाणि च भूतानि नवमासान्न जीवति ॥ ३४४ ॥

जो मनुष्य कभी २ दीपकको अथवा कसोटी लगाया हुआ सुवर्ण और संपूर्ण भूतोंको विपरीत देखे वह नौ महीनेसे परे नहीं जीवेगा ॥ ३४४ ॥

स्थूलांगोऽपि कृशः कृशोऽपि सहसा स्थूलत्व-
मालभ्यते प्राप्तो वा कनकप्रभां यदि भवेत्क्रूरोऽ-
पि कृष्णच्छविः ॥ शूरो भीरुसुधीरधर्मनिपुणः
शांतो विकारी पुमानित्येवं प्रकृतिः प्रयाति
चलनं मासाष्टकं जीवति ॥ ३४५ ॥

जिस मनुष्यकी प्रकृति (स्वभाव) इस प्रकार चलायमान हो जाय कि स्थूल हो जाय तो एकदम कृश हो जाय और कृश होय तो एकदम स्थूल हो जाय क्रूर वा कृष्ण वर्ण होकर सुवर्णसमान कांतिवाला हो जाय, शूर वीर होकर भीरु हो जाय, धार्मिक होकर अधर्मी हो जाय और शांत होकर चंचल हो जाय तो वह मनुष्य आठ महीने जीवेगा ॥ ३४५ ॥

पीडा भवेत्पाणितले च जिह्वामूले तथा स्याद्रुधिरं
च कृष्णम् ॥ विद्धं न स ग्लायति यत्र दृष्ट्या
जीवेन्मनुष्यः स हि सप्तमासम् ॥ ३४६ ॥

जिस मनुष्यके हाथके तलवेपर, जिह्वाके मूलमें रुधिर कालाही हो जाय और जिसके गातमें नोचनेसे दुःख न हो वह मनुष्य सात मास जीवेगा ॥ ३४६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मध्यांगुलीनां त्रितयं न वक्रं रोगं विना शुष्यति यस्य कंठः ॥ मुहुर्मुहुः प्रश्नवशेन जाड्यात्षड्भिः स मासैः प्रलयं प्रयाति ॥ ३४७ ॥

जिस मनुष्यकी बीचकी तीन अंगुली न मुडे और रोगके विनाही कंठ सूख जाय और जिसको वारंवार पूछनेसे जडता हो जाय अर्थात् पूर्वापरका अनुसंधान न रहे वह मनुष्य छः महीनेमें मरणको प्राप्त हो जायगा ॥ ३४७ ॥

न यस्य स्मरणं किंचिद्विद्यते स्तनचर्मणि ॥
सोऽवश्यं पंचमे मासि स्कंधारूढो भविष्यति ३४८

जिस मनुष्यके स्तनोंका चाम बधिर हो जाय वह मनुष्य पांचवें महीनेसे चार मनुष्योंके कांधेपर अवश्य चढेगा (मरेगा)॥ ३४८॥

यस्य न स्फुरति ज्योतिः पीड्यते नयनद्वयम् ॥
मरणं तस्य निर्दिष्टं चतुर्थे मासि निश्चितम् ॥३४९॥

जिस मनुष्यके नेत्रोंकी ज्योति प्रकाशित न होय और दोनों नेत्रोंमें पीडा होय, उस मनुष्यका मरण चौथे मासमें अवश्य कहा है ॥ ३४९ ॥

दंताश्च वृषणौ ह्यस्य न किंचिदपि पीड्यते ॥
तृतीयं मासमावश्यं कालाज्ञायां भवेन्नरः ॥ ३५० ॥

जिस मनुष्यके दांत और अंडकोशोंमें दबानेसे पीडा कुछ भी न हो वह तीसरे महीनेमें कालकी आज्ञामें पहुँचेगा॥ ३५०॥

कालो दूरस्थितो वापि येनोपायेन लक्ष्यते ॥
तं वदामि समासेन यथादिष्टं शिवागमे ॥३५१ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूरपर स्थितभी काल जिस उपायसे दीख जाय उस उपायको शिवशास्त्रके अनुसार संक्षेपसे कहता हूं ॥ ३५१ ॥

एकांतं विजनं गत्वा कृत्वाऽऽदित्यं च पृष्ठतः ॥
निरीक्षयेन्निजच्छायां कंठदेशे समाहितः ॥ ३५२ ॥

एकांत विजन वनमें जाकर और सूर्यको पीठपर करके अपनी छायाको सावधानीसे कंठदेशमें देखे ॥ ३५२ ॥

ततश्चाकाशमीक्षेत ह्रीं परब्रह्मणे नमः ॥
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा ततः पश्यति शंकरम् ॥ ३५३ ॥

फिर आकाशको देखे और ह्रीं परब्रह्मणे नमः इस मन्त्रका १०८ वार जप करे तो वह मनुष्य शिवजीको देखेगा॥ ३५३ ॥

शुद्धस्फटिकसंकाशं नानारूपधरं हरम् ॥
षण्मासाभ्यासयोगेन भूचराणां पतिर्भवेत् ॥
वर्षद्वयेन तेनाथ कर्त्ता हर्त्ता स्वयं प्रभुः ॥ ३५४ ॥

जिन शिवजीका रूप शुद्धस्फटिकके तुल्य है और जो नाना रूपको धारते हैं इस प्रकार छः महीने अभ्यास करनेसे भूचरों (प्राणी) का राजा होता है और दो वर्ष अभ्यास करनेसे कर्त्ता, हर्त्ता, स्वयं प्रभु हो जाता है ॥ ३५४ ॥

त्रिकालज्ञत्वमाप्नोति परमानंदमेव च ॥
सतताभ्यासयोगेन नास्ति किंचित्सुदुर्लभम् ॥ ३५५ ॥

निरंतर अभ्यास करनेसे भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालोंका ज्ञान और परम आनंदको प्राप्त होता है और उसको कोई वस्तु दुर्लभ नहीं होती ॥ ३५५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तद्रूपं कृष्णवर्णं यः पश्यति व्योम्नि निर्मले ॥
षण्मासान्मृत्युमाप्नोति स योगी नात्र संशयः ३५६॥

जिस योगीको निर्मल आकाशमें उन शिवजीका रूप कृष्ण-वर्ण दीखे वह योगी छः महीनेसे मृत्युको प्राप्त होगा इसमें संशय नहीं है ॥ ३५६ ॥

पीते व्याधिर्भयं रक्ते नीले हानिं विनिर्दिशेत् ॥
नानावर्णेऽथ चेत्तस्मिन् सिद्धिश्च गीयते महान् ३५७

पीला दीखे तो व्याधि, लाल दीखे तो भय, नीला दीखे तो हानि होती है, यदि उसमें नाना वर्ण दीखे तो योगी सिद्धियोंको प्राप्त होता है ॥ ३५७ ॥

पदे गुल्फे च जठरे विनाशः क्रमशो भवेत् ॥
विनश्यतो यदा बाहू स्वयं तु म्रियते ध्रुवम्॥३५८॥

यदि छायामें पैर गुल्फ (टकने), पेट ये न दीखें अथव भुजा न दीखे तो निश्चयसे योगी मृत्युको प्राप्त होगा ॥३५८॥

वामबाहुस्तथा भार्या नश्यतेति न संशयः ॥
दक्षिणे बंधुनाशो हि मृत्युमासं विनिर्दिशेत्॥३५९॥

यदि वाम भुजा न दीखे तो भार्या नष्ट होगी इसमें संशय नहीं, दक्षिण भुजा न दीखे तो बंधुओंका नाश होगा और एक मासमें अपनी मृत्यु होगी ॥ ३५९ ॥

अशिरो मासमरणं विना जंघे दिनाष्टकम् ॥
अष्टाभिः स्कंधनाशेन छायालोपेन तत्क्षणात्३६०॥

शिर न दीखे तो मासभर, जंघा न दीखे तो आठ दिनमें,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कंधे न दीखे तो आठ दिनमें और सर्वथा छाया न दीखे तो उसी क्षणमें मृत्यु जाननी ॥ ३६० ॥

प्रातः पृष्ठगते रवौ च निमिषाच्छायांगुलीश्चाधरं दृष्ट्वार्द्धेन मृतिस्त्वनंतरमहोच्छायां नरः पश्यति ॥ तत्कर्णांसकरास्यपार्श्वहृदयाभावे क्षणार्द्धात्स्वयं दिङ्मूढो हि नरः शिरोविगमतो मासांस्तु षड् जीवति ॥ ३६१ ॥

जो प्रातःकालके समय सूर्यको पीठकी तरफ करके छायापुरुषके अंगुली और होठ न दीखे तो निमिषमात्रमें और फिर छायाको और अपनेको न देखे तो आधे निमिषमें मृत्यु होगी और छायाके कान, कंधे, हाथ, मुख, पार्श्व, हृदय न दीखे तो आधे क्षणमें मृत्यु होगी और छायापुरुषका शिर न दीखे और स्वयं दिशाओंका ज्ञान न रहे तो मनुष्य छः महीने जीवेगा ॥ ३६१ ॥

एकादिषोडशाहानि यदि भानुर्निरंतरम् ॥
वहेद्यस्य च वै मृत्युः शेषाहेन च मासिके ॥ ३६२ ॥

जिस मनुष्यका एक दिनसे सोलह दिन पर्यंत नियमसे सूर्यस्वरही चलता रहे उस मनुष्यकी मृत्यु पंद्रह दिनके भीतर हो जायगी ॥ ३६२ ॥

संपूर्ण वहते सूर्यश्चंद्रमा नैव दृश्यते ॥
पक्षेण जायते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम् ॥ ३६३ ॥

जिस मनुष्यका निरंतर सूर्यस्वरही वहता रहे और चंद्र-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वर कभीभी न दीखे तो उस मनुष्यकी मृत्यु एक पक्षमें होती है यह कालके ज्ञानियोंने कहा है॥ ३६३ ॥

मूत्रं पुरीषं वायुश्च समकालं प्रवर्तते ॥
तदासौ चलितो ज्ञेयो दशाहे म्रियते ध्रुवम् ॥ ३६४ ॥

जिस मनुष्यके मूत्र, मल, वायु एक वार निकसे उसको चलाचलीपर जाने वह दश दिनमें अवश्य मर जावेगा ॥ ३६४ ॥

संपूर्णं वहते चंद्रः सूर्यो नैव च दृश्यते ॥
मासेन जायते मृत्युः कालज्ञेनानुभाषितम् ॥३६५॥

जिस मनुष्यका बराबर चंद्रस्वर वहता है और सूर्यस्वर एक वारभी न दीखे वह मनुष्य एक मासमें मर जायगा यह कालके ज्ञानियोंने कहा है ॥ ३६५ ॥

अरुंधती ध्रुवं चैव विष्णोस्त्रीणि पदानि च ॥
आयुर्हीना न पश्यंति चतुर्थं मातृमंडलम् ॥ ३६६ ॥

अरुंधती, ध्रुव, विष्णुके तीन पद, चौथा मातृकाओंका मंडल इनको जो न देखे वह आयुसे हीन समझना ॥ ३६६ ॥

अरुंधती भवेज्जिह्वा ध्रुवो नासाग्रमेव च ॥
भ्रुवौ विष्णुपदं ज्ञेयं तारकं मातृमंडलम् ॥ ३६७ ॥

जिह्वाको अरुंधती, नासिकाके अग्रभागको ध्रुव, भ्रुकुटियोंको विष्णुपद और तारकाओंको मातृमंडल कहते हैं ॥ ३६७ ॥

नव भ्रुवं सप्त घोषं पंच तारां त्रिनासिकाम् ॥
जिह्वामेकदिनं प्रोक्तं म्रियते मानवो ध्रुवम् ॥ ३६८ ॥

जो भृकुटी न दीखे तो नौ दिनमें, कानोंका शब्द न सुने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो सात दिनमें, तारा न दीखे तो पांच दिनमें, नासिका न दीखे तो तीन दिनमें, जिह्वा न दीखे तो एक दिनमें मनुष्यका निश्चयसे मरण कहा है ॥ ३६८ ॥

कोणावक्ष्णोरंगुलीभ्यां किंचित्पीड्य निरीक्षयेत् ॥
यदा न दृश्यते बिंदुर्दशाहेन भवेन्मृतः ॥ ३६९ ॥

नेत्रोंके कोनोंको अंगुलियोंसे कुछ दबाकर देखे यदि दबानेसे तेजकी बिंदु न निकले तो जान लो कि दश दिनमें मर जायगा ॥ ३६९ ॥

तीर्थस्नानेन दानेन तपसा सुकृतेन च ॥
जपैर्ध्यानेन योगेन जायते कालवंचना ॥ ३७० ॥

तीर्थोंके स्नान, दान, तप, सुकृत, जप, ध्यान योग इनसे कालकी वंचना हो जाती है अर्थात् आया हुआभी काल टल जाता है ॥ ३७० ॥

शरीरं नाशयंत्येते दोषा धातुमलास्तथा ॥
समस्तु वायुर्विज्ञेयो बलतेजोविवर्द्धनः ॥ ३७१ ॥

धातु और मल आदि ये दोष शरीरको नष्ट कर देते हैं और वायुकी समानता बल और तेज बढानेवाली होती है ३७१ ॥

रक्षणीयस्ततो देहो यतो धर्मादिसाधनम् ॥
योगाभ्यासत्वमायांति साधिजप्यास्तु साध्यताम् ॥
असाध्या जीवितं घ्नंति न तत्रास्ति प्रतिक्रिया ३७२ ॥

इससे उस देहकी रक्षा करनी जो धर्म आदिका साधन है, योगाभ्यासही जपरूप हो जाता है और योगसे असाध्य साध्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जाता है, जो योगाभ्यास न होय तो असाध्य मर जाते हैं उनको कोई प्रतिकार (इलाज) अन्य नहीं ॥ ३७२ ॥

येषां हृदि स्फुरति शाश्वतमद्वितीयं तेजस्तमो-
निवहनाशकरं रहस्यम् ॥ तेषामखंडशशिरम्य-
सुकांतिभाजां स्वप्नेऽपि नो भवति कालभयं
नराणाम् ॥ ३७३ ॥

जिन मनुष्योंके हृदयमें अनादि, अद्वितीय अंधकारके समूहका नाश करनेवाला और गोपनीय तेज (शिवस्वरोदयका ज्ञान) फुरता है, अखंड चंद्रमाके समान रमणीय है कांति जिनकी ऐसे उन मनुष्योंके स्वप्नमेंभी कालका भय नहीं होता ॥ ३७३ ॥

इडा गंगेति विज्ञेया पिंगला यमुना नदी ॥
मध्ये सरस्वतीं विद्यात्प्रयागादिसमस्तथा ॥ ३७४ ॥

इडा नाडी गंगा और पिंगला नाडी यमुना नदी जाने और मध्यकी सुषुम्ना सरस्वती इन तीन नाडियोंके संगमको प्रयागके समान समझना ॥ ३७४ ॥

आदौ साधनमाख्यातं सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥
बद्धपद्मासनो योगी बंधयेदुड्डियानकम् ॥ ३७५ ॥

प्रथम साधनकोही शीघ्र प्रतीतिका कारण कहा है इससे योगी पद्मासनको बांधकर उड्डियानक नाम आसनको बांधे अर्थात् अपानकी गतिको ऊपरको कर नाभिरंध्रके समीप लावे॥३७५॥

पूरकः कुंभकश्चैव रेचकश्च तृतीयकः ॥
ज्ञातव्यो योगिभिर्नित्यं देहसंशुद्धिहेतवे ॥ ३७६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योगिजन अपने देहकी भली प्रकार शुद्धिके लिये पूरक कुंभक और रेचक इन तीनों प्राणायामोंको जाने॥ ३७६॥

पूरकः कुरते वृष्टिं धातुसाम्यं तथैव च॥
कुंभके स्तंभनं कुर्याज्जिवरक्षाविवर्द्धनम्॥ ३७७॥

उन तीनोंमें पूरक प्राणायाम (बाहरकी वायुको भीतर खींचना) वृष्टिसे देहको सींचता है और संपूर्ण धातुओंको समान करता है और कुंभक प्राणायाम (बाहर भीतरकी वायुको स्थिर रखना) देहकी धातुओंका स्तंभन (जहांकी तहां रखना) करता है और जीवकी रक्षाको बढाता है॥ ३७७॥

रेचको हरते पापं कुर्याद्योगपदं व्रजेत्॥
पश्चात्संग्रामवत्तिष्ठेल्लयबंधं च कारयेत्॥ ३७८॥

रेचक प्राणायाम (भीतरकी वायु बाहर निकालना) पापको हरता है इस प्रकार जो प्राणायाम करता है वह योगपदको प्राप्त होता है, फिर जो योगी समानरूपसे टिकता है वह लयबंधको कर सकता है अर्थात् मृत्युको रोक सकता है॥ ३७८॥

कुंभयेत्सहजं वायुं यथाशक्ति प्रकल्पयेत्॥
रेचयेच्चंद्रमार्गेण सूर्येणापूरयेत्सुधीः॥ ३७९॥

स्वाभाविक वायुको अपनी शक्तिके अनुसार कुंभक प्राणायामसे रोके, चंद्रस्वरसे रेचक करे और सूर्यस्वरसे पूरक प्राणायामको बुद्धिमान् मनुष्य करे॥ ३७९॥

चंद्रं पिबति सूर्यश्च सूर्यं पिबति चंद्रमाः॥
अन्योन्यकालभावेन जीवेदाचंद्रतारकम्॥ ३८०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसके चंद्रस्वरको सूर्यस्वर और सूर्यस्वरको चंद्रस्वर परस्पर समय २ पर पीवे वह चंद्रमा और तारोंकी स्थिति पर्यंत जीवेगा ॥ ३८० ॥

स्वीयांगे वहते नाडी तन्नाडीरोधनं कुरु ॥
मुखबंधममुंचन्वै पवनं जायते युवा ॥ ३८१ ॥

जो योगी अपने अंगमें जो नाडी वहती होय उसको रोककर और अपने मुखको बांधकर मुखसे पवनको न निकस दे वह योगी वृद्ध अवस्थासे युवा अवस्थाको प्राप्त होता है॥ ३८१ ॥

मुखनासाक्षिकर्णांतानंगुलीभिर्निरोधयेत् ॥
तत्वोदयमिति ज्ञेयं षण्मुखीकरणं प्रियम् ॥३८२॥

मुख, नासिका, नेत्र, कान इनको अपनी अंगुलियोंसे रोके इसीको तत्वोदय षण्मुखीकरण और प्रिय जानना ॥ ३८२ ॥

तस्य रूप गतिः स्वादो मंडलं लक्षणं त्विदम् ॥
स वेत्ति मानवो लोके संसर्गादपि मार्गवित् ॥३८३॥

उसका रूप यह है कि वह योगी तत्वोंका रूप, गति, स्वाद, मंडल, लक्षण इन सबको जगत्में जानता है और तत्वोंके हेल मेलमेंभी पृथक् २ मार्गको जान सकता है ॥ ३८३ ॥

निराशो निष्फलो योगी न किंचिदपि चिंतयेत् ॥
वासनामुन्मनां कृत्वा कालं जयति लीलया ॥३८४

आशारहित और शुद्धरूप योगी किसी वस्तुकी चिंता करे और वासनाओंके त्यागसे लीला (अनायास) से काल जीतता है ॥ ३८४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वस्य वेदिकाशक्तिर्नेत्राभ्यां परिदृश्यते ॥
तत्रस्थं तु मनो यस्य याममात्रं भवेदिह ॥ ३८५ ॥

सब विश्वके जाननेकी शक्ति नेत्रोंसे दीखती है उस शक्तिके विषय जिस योगीका मन एक प्रहर मात्र टिके ॥ ३८५ ॥

तस्यायुर्वर्धते नित्यं घटिकात्रयमानतः ॥
शिवेनोक्तं पुरा तंत्रे सिद्धस्य गुणगह्वरे ॥ ३८६ ॥

उस योगीकी अवस्था प्रतिदिन तीन (३) घटिकाके प्रमाणसे बढती है, यह बात गुणवान् सिद्धोंके समूहमें शिवजीने तंत्रशास्त्रमें कही है ॥ ३८६ ॥

बद्धं पद्मासनस्था गुदगतपवनं सन्निरुद्धयाशुमुच्चै-
स्तं तस्यापानरंध्रक्रमजितमनिलं प्राणशक्त्या निरुद्धय ॥ एकीभूतं सुषुम्ना विवरमुपगतं ब्रह्मरंध्रे च नीत्वा निक्षिप्याकाशमार्गे शिवचरणरता यांति ते केऽपि धन्याः ॥ ३८७ ॥

योगी पद्मासनको बांधकर गुदामें स्थित पवन (अपान) को रोककर उसको ऊंचेको ले जाय और अपान रंध्रमें नीचे (स्थिर) कर उसको प्राण शक्तिके संग रोककर दोनोंकी एकता करे जब दोनों एक हो जांय और सुषुम्ना नाडीके रंध्रमें पहुँचावे फिर ब्रह्मरंध्रमें लेजाकर आकाशमार्गमें छोड दे इस प्रकार शिवजीके चरणोंमें रत जो कोई योगी जाते हैं (मरते हैं) वे धन्य हैं ३८७

एतज्जानाति यो योगी एतत्पठति नित्यशः ॥
सर्वदुःखविनिर्मुक्तो लभते वांछितं फलम् ॥ ३८८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri